A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 03 अगस्त, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 325, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailĐcom

facebookĐcom/subahsaverenews

wwwĐsubahsavereĐnews

twitterĐcom/subahsaverenews

गुजरात के जामनगर में स्थित मानव निर्मित रणमल झील लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। झील कभी एक महल का तालाब हुआ करती थी और ऐतिहासिक लाखोटा किले से घिरी हुई है। इसे लाखोटा झील भी कहा जाता है।

फोटो: डॉ. पीयुष माटलिया

सुप्रभात

मत बताना किसी लकड़हारे को
जंगल का महत्व,
उसकी आत्मा ने चखा है
जंगलों का स्वाद
वह सखा है जंगल का।

हो सके तो लाकर देना उसे
नई कुल्हाड़ी।

उसके लिए नये जंगल उगाना
तुम्हारा काम है।

किसी मछुवारे को मत देना
जीव-हत्या के पाप पर
प्रवचन,

गर दे सको तो देना लाकर उसे
फटते जाल के बदले
एक नया जाल।

क्योंकि ! संमदर छटपटाता है,
और तड़पती हैं, मछलियाँ !
एक दिन भी उसे न पाकर।

उस दिन संमदर आ बसता है
उसकी आँखों में
और मछलियाँ तैरने लगती हैं
सपनों में।

तुम्हारे धर्म की जद से बाहर हैं कई सभ्यताएं
उन्हें बाहर ही रहने दो।

किसी बच्चे से मत लेना उसे दिये
दस रुपए के खर्च का हिसाब।

तुम्हारी जोड़-तोड़ की मंशा से परे
खर्चा होगा उसने उसे,

दुनिया खूबसूरत बनाने में ही,
उसने खाई होंगी मीठी गोलियाँ
दोस्तों के साथ।

उछाला होगा एक सिक्का
गली के मुहाने पर बैठी बुढ़िया की ओर,

खरीद कर अर्पित किये होंगे
कुछ कंचे धरती माँ को भी।

ध्यान रहे ! तुम्हें दूसरों को नहीं
बस खुद को उभारना है।

– आलोक मिश्रा

'ऑपरेशन सिंदूर' बाबा विश्वनाथ को समर्पित

- काशी में बोले पीएम मोदी- मैंने अपना वादा पूरा किया
- कहा- महादेव का एक रूप कल्याण है तो दूसरा रौद्र है

बनारस (एजेंसी) प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार को अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी पहुंचे, जहां उन्होंने 'ऑपरेशन सिंदूर' की सफलता को भगवान महादेव के चरणों में समर्पित करते हुए इसे एक पूरा किया गया वादा बताया। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले में 26 लोगों की निर्मम हत्या के जवाब में चलाए गए इस ऑपरेशन को प्रधानमंत्री ने बेटियों के सिंदूर का बदला कहा। अपने संबोधन में प्रधानमंत्री ने कहा,यह हमला मेरे

लिए बेहद दर्दनाक था। खासकर उन महिलाओं के लिए जिनके सुहाग उजड़ गए। मैंने वचन दिया था कि मैं उनकी मांग का सिंदूर नहीं मिटने दूंगा। महादेव की कृपा से यह पूरा हुआ है।

लखपति दीदी का आंकड़ा सुनकर सपा वाले साइकिल लेकर भाग जाएंगे

मोदी ने कहा–हमारा देश में तीन करोड़ लखपति दीदी बनाने का लक्ष्य है।अब तक डेढ़ करोड़ से ज्यादा लखपति दीदी बन चुकी हैं। लक्ष्य का आधा काम पूरा कर लिया। ये आंकड़ा सुनकर सपा वाले साइकिल लेकर भाग जाएंगे। सरकार के ड्रोन दीदी अभियान ने लाखों लोगों की आय बढ़ाई है। अगर पाकिस्तान ने फिर कोई पाप किया तो यूपी में बनी मिसाइलें आतंकियों को तबाह कर देंगीं।आज यूपी इतनी तेजी से विकास कर रहा है।सपा के समय में यूपी में अपराधी बेखौफ थे। निवेशक यूपी आने से डरते थे। भाजपा की सरकार में अपराधियों में खौफ है।आज निवेशक यूपी में भरोसा देख रहे हैं।

कांग्रेस ने ऑपरेशन सिंदूर को तमाशा कहा

कांग्रेस ने ऑपरेशन सिंदूर को तमाशा कहा है।क्या सिंदूर को कोई तमाशा कह सकता है।हमारी सेना का पराक्रम और बहनों के सिंदूर का बदला... तमाशा कहने की ये हिम्मत...ये निर्लज्जता...वोटबैंक और तुष्टीकरण की इस राजनीति में सपा भी पीछे नहीं है। सपा के नेता संसद में कह रहे थे कि पहलगाम के आतंकियों को अभी क्यों मारा।अब बताइए, मैं फोन करके इनसे पूछूं।ये वही लोग हैं जब यूपी में सत्ता में थे तो आतंकियों को क्लीनचिट देते थे। बम धमाके करने वालों से मुकदमे वापस लेते थे। मैं काशी की धरती से कहना चाहता हूं। ये नया भारत है। भोलेनाथ को भी पूजता है। दुश्मनों के सामने काल भैरव भी बन जाता है। विरोधी संसद में कह रहे थे कि

पहलगाम के आतंकियों को क्यों मारा।क्या सपा वालों को फोन करूं क्या। क्या आतंकियों को भागने का मौका देना चाहिए था। पाकिस्तान के कई सारे एयरबेस आज भी आईससीयू में पड़े हैं।पाकिस्तान दुखी है।ये तो सब कोई समझ सकता है, लेकिन पाकिस्तान का ये दुख सपा और कांग्रेस से सहन नहीं हो रहा। उधर, आतंक का आका रोता है। इधर कांग्रेस–सपा वाले आतंकियों की हालत देखकर रोते हैं। कांग्रेस हमारी सेनाओं के पराक्रम का लगातार अपमान कर रही है।

बिहार के वोटर लिस्ट से नहीं कटा है तेजस्वी यादव का नाम

- सबूतों के साथ मैदान में उतरा चुनाव आयोग, दिए हर सवाल के जवाब

पटना (एजेंसी)। बिहार के वोटर लिस्ट से तेजस्वी यादव का नाम नहीं कटा है। पटना जिला प्रशासन ने तेजस्वी यादव के आरोपों को गलत बताया है। प्रशासन की ओर से सबूत देकर तेजस्वी यादव के आरोपों का जवाब दिया गया। वोटर लिस्ट में नाम नहीं होने को लेकर तेजस्वी यादव ने मीडिया के सामने चुनाव आयोग पर आरोप लगाए थे, इसके बाद जिला प्रशासन ने पूरे मामले की पड़ताल कराई, जिसमें तेजस्वी के आरोप गलत पाए गए। तेजस्वी यादव

का नाम मतदाता सूची से नहीं हटाया गया है। उनका मतदान केंद्र बदल दिया गया है। पटना के जिलाधिकारी ने बताया कि तेजस्वी यादव का नाम मतदाता सूची में है। तेजस्वी यादव ने आरोप लगाया था कि उनका नाम मतदाता सूची से हटा दिया गया है। इसके बाद चुनाव आयोग तुरंत हरकत में आया। आयोग ने बताया कि तेजस्वी यादव का नाम मतदाता सूची से नहीं हटाया गया है। उनका मतदान केंद्र बदला गया है। पहले उनका नाम मतदान केंद्र संख्या 171 पर था। अब उनका नाम मतदान केंद्र संख्या 204 पर है।

सीहोर के बड़ियाखेड़ी में 2000 करोड़ रुपए के निवेश से नए उद्योग किए जाएंगे आरंभ

प्रदेश में हर तीसरे दिन उद्योग जगत को नई सौगात और युवाओं को मिल रहे हैं रोजगार के अवसर: मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में बदलते दौर में भारत की भूमिका विश्व में निरंतर महत्वपूर्ण हो रही है। भारत को कभी सोने की चिड़िया कहा जाता था। आज भारत सोने के बाघ की तरह दहाड़ रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी 'भारत फर्स्ट' की भावना से देश के किसान और उद्योगपतियों के लिए दुनिया से लोहा लेने को तैयार हैं। उनकी मंशा के अनुरूप प्रदेश में हर दूसरे या तीसरे दिन उद्योगों को नई सौगात और युवाओं को रोजगार का लाभ मिल रहा है। इसी क्रम में सीहोर के बडियाखेड़ी में 2000 करोड़ रुपए के निवेश से नए उद्योग आरंभ किए जाएंगे। सीहोर में जल्द ही एक लाख मैट्रिक टन सब्जियों की खरीद की व्यवस्था शुरू होगी, इससे जिले के दो लाख परिवारों को लाभ मिलेगा। सीहोर में पावर ट्रांसफार्मर की इकाई लगने से भी रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। सीहोर को 'पार्वती काली सिंध चंबल परियोजना' का लाभ भी मिलेगा। आगामी वर्षों में सीहोर, भोपाल मेट्रोपॉलिटन सिटी का महत्वपूर्ण हिस्सा होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को सीहोर जिले के बडियाखेड़ी में नई औद्योगिक इकाइयों के भूमि-पूजन और आशय-पत्र वितरण कार्यक्रम में उपस्थित जन समुदाय को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में 400 से अधिक उद्योग जगत के प्रतिनिधियों ने सहभागिता की।

रोजगारपरक उद्योग लगाने विशेष प्रोत्साहन प्रदान कर रही है राज्य सरकार

यादव ने कहा कि उद्योग लगाने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। राज्य सरकार उद्योगपतियों को हर संभव सहयोग कर प्रदेश में रोजगार परकउद्योग लगाने को विशेष प्रोत्साहन दे रही है। हमारा प्रयास है कि प्रदेश के युवाओं को रोजगार के लिए प्रदेश से बाहर जाने की जरूरत न पड़े।

सीहोर में 12 से 14 अक्टूबर तक होगा राज्य स्तरीय कृषि मेला

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि सीहोर में 12 से 14 अक्टूबर तक राज्य स्तरीय कृषि मेला आयोजित किया जाएगा, जिसमें देशभर के उद्योगपति, किसान और विशेषज्ञ शामिल होंगे। उन्होंने कहा कि हम मध्यप्रदेश को कृषि और दुग्ध उत्पादन में देश में सर्वश्रेष्ठ बनाने के लक्ष्य के कार्य कर रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि राज्य सरकार प्रत्येक विकासखंड में एक वृंदावन ग्राम विकसित कर रही है। प्रदेश में श्रीकृष्ण पथ विकसित करने की दिशा में भी कार्य जारी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वर्तमान में प्रदेश में कृषि सिंचाई का रकबा बढ़कर 52 लाख हेक्टेयर से अधिक हो गया है। स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, पर्यटन सहित सभी क्षेत्रों में नवाचार किए जा रहे हैं। राज्य सरकार की एयर एंबुलेंस योजना का देश के अन्य राज्य अनुसरण कर रहे हैं। गरीब जरूरतमंद परिवारों के लिए जिलों में शव वाहन भी उपलब्ध कराए गए हैं।

वह दिन दूर नहीं जब देश के नक्शे से गायब हो जाएगा हिमाचल !

- सुप्रीम कोर्ट ने हिमाचल प्रदेश के पर्यावरण विनाश पर जताई चिंता
- कहा- बिना वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकास नहीं रुका तो आएगी सुनामी

शिमला (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने हिमाचल प्रदेश में पर्यावरणीय विनाश और अनियंत्रित विकास पर गहरी चिंता जताई। एससी की डबल बैंच ने कहा कि, यदि

हिमाचल में निर्माण कार्य और विकास योजनाएं इसी तरह बिना वैज्ञानिक दृष्टिकोण के चलती रहीं तो वह दिन दूर नहीं जब हिमाचल देश के नक्शे से गायब हो जाएगा, भगवान करें कि ऐसा न हो। दरअसल, एससी में एमएस प्रिस्टिन होटल्स एंड रिजार्ट्स प्राइवेट लिमिटेड ने एक

याचिका पर बीते शुक्रवार को सुनवाई कर रहा था। इस दौरान जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस आर महादेवन की पीठ ने यह टिप्पणी की। एससी ने याचिकाकर्ता की पिटीशन को खारिज करते हुए पर्यावरण एवं पारिस्थितिकीय मुद्दों पर स्वतः संज्ञान लिया और इसे इसे जनहित याचिका माना। सुप्रीम कोर्ट ने प्रदेश सरकार को 4 सप्ताह में विस्तृत जवाब देने को कहा है। इसे लेकर राज्य के मुख्य सचिव और केंद्रीय वन मंत्रालय को पत्र लिखा गया है। इस मामले में 25 अगस्त को अगली सुनवाई होगी। सुप्रीम कोर्ट ने याचिका की सुनवाई करते हुए हिमाचल सरकार द्वारा ग्रीन एरिया घोषित करने वाली अधिसूचनाएं जारी करने को अच्छा प्रयास बताया।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 32 °c | न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 03 अगस्त 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

'नशे से दूरी-है जरूरी' ने बनाया वर्ल्ड रिकार्ड

Mantra Of Success

(राजेश शर्मा)

पुलिसिंग का उद्देश्य केवल अपराधियों को पकड़ना ही नहीं, बल्कि समाज में विश्वास और सुरक्षा की भावना को मजबूत करना भी है। मध्यप्रदेश पुलिसिंग का यह बदलता स्वरूप है। ' सामाजिक सरोकार - संवेदना - समाज के प्रति जवाबदेही ' के सूत्र वाक्य को अंगीकार कर प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मार्गदर्शन में पुलिस महानिदेशक कैलाश मकवाणा ने मध्यप्रदेश पुलिस के नशे के विरूद्ध 15 जुलाई से 30 जुलाई तक 'नशे से दूरी-है जरुरी' जन आंदोलन के रूप में जनजागरूकता अभियान चलाया। वर्ल्ड रिकॉर्ड बना कर आज इस अभियान की गूंज ब्रिटिश पार्लियामेंट तक गुंजायमान होने जा रही है।

Mantra Of Success में मध्यप्रदेश पुलिस के सामाजिक सरोकारों के इस अभियान की सफलता की कहानी है कि कैसे आज यह अभियान जनआंदोलन बन गया है। आज मध्यप्रदेश पुलिस का यह माडल देश और दुनिया के समक्ष एक नजीर है। 'नशे से दूरी-है जरुरी' के पवित्र साध्य की सफलता के लिए पवित्र साधनों से आज अभियान को अंतराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली है.. डीजीपी और मध्यप्रदेश पुलिस की मानवीय संवेदना और सामाजिक सरोकारों की पहल की गूंज देश और दुनिया में...।

मप्र पुलिस का जनजागरूकता अभियान

अभियान को अंतराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली है यह सभी पुलिसकर्मियों, सहयोगी संस्थाओं , प्रदेश की जनता के समर्पण का परिणाम है - डीजीपी मकवाणा-

डीजीपी मकवाणा ने कहा कि प्रदेश के युवाओं और किशोरों को नशा मुक्त रखना हमारा शासकीय कर्तव्य ही नहीं नैतिक दायित्व भी है। इस अभियान के दौरान सभी पुलिस अधिकारी और कर्मचारी तथा अन्य सहयोगी विभाग, विभिन्न संगठनों के अथक प्रयास से यह अभियान जनआंदोलन बन गया। उन्होंने कहा कि हमारा उद्देश्य कभी भी कोई विश्व रिकॉर्ड बनाना नहीं था बल्कि अधिक से अधिक लोगों को नशे से दूर रहने के लिए प्रेरित करना था। यदि इस अभियान को अंतराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिली है, तो यह सभी पुलिसकर्मियों, सहयोगी संस्थाओं और प्रदेश की जनता के समर्पण का परिणाम है। वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्डस के सीईओ शुक्ला ने मध्यप्रदेश पुलिस के इस अनूठे जन जागरण अभियान की सराहना करते हुए कहा कि यह अभियान अपने उद्देश्य में सफल रहा। उन्होंने 13 सितंबर को ब्रिटिश पार्लियामेंट में आयोजित होने वाले सम्मान समारोह मे डीजीपी मकवाणा को आमंत्रित भी किया। वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्डर्स के सीईओ ने डीजीपी को वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्डस का दिया सर्टिफिकेट।

प्रदेश के 57 जिलों के 1175 थानों में संचालित इस अभियान में 23 लाख लोगों ने प्रत्यक्ष तथा सोशल मीडिया माध्यमों से 6.35 करोड़ लोगों ने सहभागिता की। मध्यप्रदेश पुलिस के नशे के विरूद्ध 15 जुलाई से 30 जुलाई तक चलाए गए 'नशे से दूरी-है जरुरी' राज्यव्यापी जनजागरूकता अभियान ने अपनी व्यापकता, प्रभावशीलता तथा वृहद स्तर पर जनसहभागिता के चलते वर्ल्ड रिकॉर्ड कायम किया है। प्रदेश के 57 जिलों के 1175 थानों द्वारा संचालित इस अभियान में लगभग 23 लाख लोगों ने प्रत्यक्ष सहभागिता तथा सोशल मीडिया माध्यमों से 6.35 करोड़ लोगों ने सहभागिता की। पुलिस मुख्यालय में वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्डस के सीईओ तथा प्रेसीडेंट संतोष शुक्ला ने पुलिस महानिदेशक कैलाश मकवाणा और एडीजी नारकोटिक्स के.पी. व्यंकटेश्वर राव को सर्टिफिकेट प्रदान किया। इस दौरान वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्डस संस्था की जनरल सेक्रेटरी डॉ. तिथि भल्ला तथा एडिटर सुश्री अपूर्वा मेनन सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

ऑपरेशन अखल में बड़ी सफलता, कुलगाम में तीन आतंकी ढेर

● कश्मीर घाटी में सेना चुन-चुनकर दहशतगर्दों का कर रही है सफाया

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू कश्मीर में पहलगाम हमले के बाद भारतीय सेना आतंकवाद को नेस्तनाबूद करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ रही है। इसी कड़ी में सेना ने ऑपरेशन 'ऑपरेशन अखल' चला कर तीन आतंकवादी को मार गिराया है। पहलगाम के बाद, सेना ने घाटी में पिछले 100 दिनों में चुन-चुनकर करीब 12 मोस्ट वांटेड आतंकियों को मार गिराया है। सुरक्षाकर्मियों ने 28 जुलाई को 'ऑपरेशन महादेव' चलाया, जिसमें लश्कर-ए-तैयबा के 3 आतंकी मारे गए। आतंकवादियों में मास्टरमाइंट मूसा भी ढेर हो गया था।

द केरल स्टोरी' को पुरस्कार मिलने पर भड़के सीएम विजयन

● बोले- फिल्म को सम्मानित करना केरलवासियों का अपमान है

मुंबई (एजेंसी)। सुदीप्तो सेन के निर्देशन में बनी फिल्म 'द केरल स्टोरी' को 71वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार में बेस्ट डायरेक्टर और बेस्ट सिनेमैटोग्राफी का पुरस्कार मिला, जिसके बाद केरल सरकार ने इसकी कड़ी आलोचना की। मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने इस फैसले की निंदा करते हुए इसे भारतीय सिनेमा की महान परंपरा का अपमान बताया। सीएम पिनाराई विजयन ने पोस्ट शेयर किया। उन्होंने लिखा एक ऐसी फिल्म को सम्मान देना गलत है जो केरल की छवि को खराब करती है।

प्रोफेसर देव आनंद हिंडोलिया ने संभाला अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति का प्रभार

भोपाल (नप्र)। राजभवन के आदेशानुसार प्रोफेसर देव आनंद हिंडोलिया ने आज अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति का प्रभार ग्रहण किया। प्रभार ग्रहण करने के उपरांत उन्होंने विश्वविद्यालय परिसर का भ्रमण कर समस्त शिक्षकों एवं कर्मचारियों से व्यक्तिगत रूप से भेंट की और विश्वविद्यालय के कार्यों की प्राथमिक जानकारी प्राप्त की।

प्रोफेसर हिंडोलिया ने इस अवसर पर एक संक्षिप्त सभा को संबोधित करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय एक जीवंत संस्था होता है, जिसकी आत्मा शिक्षक, कर्मचारी और विद्यार्थी होते हैं। उन्होंने समग्र सहयोग और सामूहिक भागीदारी की भावना से कार्य करने की अपेक्षा व्यक्त की और कहा कि हम सब मिलकर एक नवीन, सशक्त और गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालय की परिकल्पना को साकार करेंगे।

उन्होंने स्पष्ट किया कि आगामी समय में शिक्षण, शोध और प्रशासन के प्रत्येक स्तर पर पारदर्शिता, नवाचार और उत्तरदायित्व की भावना को प्राथमिकता दी जाएगी। उन्होंने कहा कि हिंदी विश्वविद्यालय देश की भाषायी अस्मिता और शैक्षिक उत्थान का एक प्रमुख केंद्र है, और इसे राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विशिष्ट पहचान दिलाने के लिए हम सबको मिलकर सतत प्रयास करना होगा। सभा में विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षकगण, अधिकारीगण और कर्मचारीगण उपस्थित रहे। सभी ने प्रोफेसर हिंडोलिया का स्वागत करते हुए उन्हें पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

वसुधा समारोह में युवाओं से अपील 'पर्यावरण बचाइए'

भोपाल। 'यदि बेहतर पर्यावरण चाहिए तो पानी बचाने जैसे आसान तरीक़े युवाओं को अपनाने होंगे।' यह संदेश आज हैल्पबॉक्स फाउंडेशन और केरियर ग्रुप द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित 'वसुधा पर्यावरण एवं कला समारोह 2025' में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित वरिष्ठ पर्यावरणविद् और लेखक अभिलाष खांडेकर ने दिया।

उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे जल संरक्षण, स्वच्छता और हरित जीवनशैली के लिए व्यक्तिगत प्रयास करें। खांडेकर ने कार्यक्रम में उपस्थित युवाओं को शपथ दिलाई कि वे अपने शहर को स्वच्छ, सुंदर और तंदुरुस्त बनाए रखने के लिए सक्रिय भूमिका निभाएँगे। इस अवसर पर उन्होंने पर्यावरण जागरूकता पर आधारित पुस्तिका और पेम्फलेट भी वितरित किए।

कार्यक्रम में युवा पर्यावरणविद् साक्षी भारद्वाज ने संवाद सत्र में युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा, यदि आप आज पर्यावरण नहीं बचाएंगे, तो आने वाली पीढ़ियों के लिए कुछ नहीं बचेगा। उन्होंने कहा कि युवाओं को यह जानना ज़रूरी है कि उन्हें 'क्यों' पूछने का अधिकार है। यह सवाल उठाइए उन लोगों से जो सड़क पर कचरा फैलाते हैं, पानी बर्बाद करते हैं या सिंगल यूज़ प्लास्टिक का अंधाधुंध इस्तेमाल करते हैं।साक्षी ने कहा कि ऑर्गेनिक जीवन जीने के लिए जीवनशैली में स्थायी और छोटे बदलाव बेहद ज़रूरी हैं।

इस समारोह में साक्षी भारद्वाज को उनके उत्कृष्ट पर्यावरणीय कार्यों के लिए 'हैल्पबॉक्स वसुधा सम्मान' से अलंकृत किया गया। संवाद को सुनिल शुक्ल और सुनील अवसरकर द्वारा मॉडरेट किया गया।

समारोह के दौरान केरियर कॉलेज के विद्यार्थियों द्वारा 'जंगल और बाघ बचाओ' विषय पर एक प्रेरक नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया गया जिसने दर्शकों को विशेष रूप से प्रभावित किया। इस अवसर पर 'वसुधा 2025' वार्षिकी का विमोचन भी किया गया, जिसमें पर्यावरण कहानियाँ एवं नवाचारों को स्थान दिया गया है।

केरियर ग्रुप के चेयरमैन श्री मनीष राजोरिया ने अपने संदेश में उपभोक्तावादी मानसिकता से बाहर निकलने और प्रकृति के प्रति ज़िम्मेदारी निभाने की आवश्यकता पर बल दिया। कॉलेज की प्राचार्या डॉ. चरणजीत कौर ने डीएनए की अवधारणा के माध्यम से पर्यावरण की सुंदर वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की।

सभा में केरियर कॉलेज का प्राध्यापक वर्ग, विभिन्न संस्थानों के विद्यार्थी, पर्यावरण कार्यकर्ता, वालंटियर्स और स्वच्छता से जुड़े स्वयंसेवी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में हैल्पबॉक्स फाउंडेशन की चेयरपर्सन कविता अवसरकर ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन सुनिल शुक्ल ने किया।

गुरुग्राम लैंड डील, रॉबर्ट वाड्रा को कोर्ट का नोटिस

● साढ़े 7 करोड़ की जमीन 58 करोड़ में बेचने का आरोप

गुरुग्राम (एजेंसी)। हरियाणा में गुरुग्राम के शिकोहपुर गांव में जमीन सौदे और मनी लॉन्ड्रिंग मामले में दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट ने शनिवार को कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी के पति रॉबर्ट वाड्रा समेत अन्य आरोपियों को नोटिस जारी किया है। यह नोटिस अगली सुनवाई से पहले आरोपियों को अपनी बात कोर्ट में रखने के लिए भेजा गया है। अगली सुनवाई 28 अगस्त को होगी। शनिवार की सुनवाई में विशेष न्यायाधीश सुशांत चंगोत्रा ने प्रवर्तन निदेशालय की दलीलें सुनने के बाद आरोपियों को नोटिस भेजा।

प्रज्वल रेवन्ना को रेप केस में मिली उम्र कैद की सजा

● बेंगलुरु कोर्ट ने पीड़ित को 7 लाख देने को कहा

पूर्व प्रधानमंत्री के पोते को कल दोषी ठहराया था

मैसूरु (एजेंसी)। बेंगलुरु की स्पेशल कोर्ट ने शनिवार को पूर्व जेडीएस सांसद और पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवेगौड़ा के पोते प्रज्वल रेवन्ना को नौकरानी से रेप केस में उम्र कैद की सजा सुनाई। कोर्ट ने रेवन्ना पर 10 लाख रुपए का जुर्माना लगाया। साथ ही पीड़ित को 7 लाख रुपए का मुआवजा देने का भी आदेश दिया। कोर्ट ने शुक्रवार को रेवन्ना को दोषी ठहराया था। रेवन्ना ने कोर्ट में कम सजा देने की अपील करते हुए दावा किया था कि उन्होंने कुछ भी गलत नहीं किया है। दरअसल, रेवन्ना के परिवार के फार्महाउस में काम करने वाली 47 साल की महिला ने पिछले साल अप्रैल में रेवन्ना के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई थी। इसमें रेवन्ना पर 2021 से कई बार रेप करने और किसी को भी घटना के बारे में बताने पर वीडियो लीक करने की धमकी देने का आरोप लगाया था। कोर्ट ने 18 जुलाई को इस मामले की सुनवाई पूरी की थी।

आईपीएस बिनीता ठाकुर बनेंगी सीआईएसएफ की एडीजी

केंद्र की सरकार ने राजस्थान के मुख्य सचिव को भेजा पत्र

जयपुर (एजेंसी)। राजस्थान कैडर की सीनियर आईपीएस ऑफीसर बिनीता ठाकुर को केंद्र सरकार ने सीआईएसएफ की नई एडीजी नियुक्त किया है। केंद्र सरकार के इस फैसले के बाद राजस्थान के मुख्य सचिव को एक पत्र भेजा गया है। पत्र में लिखा है कि आईपीएस बिनीता ठाकुर को जल्द से जल्द राजस्थान से कार्यमुक्त किया जाए ताकि वे अपने नए पद पर जॉइनिंग कर सके। बिनीता ठाकुर 1996 बैच की आईपीएस अफसर हैं। अलवर की रहने वाली बिनीता वर्तमान में पुलिस हाउसिंग की एडीजी हैं।

अब किसान महोत्सव के बहाने 'चुनावी उत्सव' मना गई भाजपा!

● बिहार के 76 लाख परिवारों तक पहुंच गया बीजेपी का संदेश

पटना (एजेंसी)। योजनाओं पर चुनावी रंग चढ़ाना तो कोई भाजपा से सीखे। पीएम नरेंद्र मोदी के आगमन के दौरान योजनाओं की बौझार हो या फिर केंद्रीय मंत्री के आगमन के साथ योजना के जरिए एक बड़े वर्ग को प्रभावित करने का मौका, भाजपा ऐसे मौके नहीं छोड़ती। आज ऐसा ही नजारा बापू सभागार में दिखा। भाजपा प्रधानमंत्री किसान उत्सव दिवस को राजधानी में परोक्ष रूप से बिहार विधानसभा चुनाव के ऐन मौके पर इसे प्रचार दिवस के रूप में मनाती दिखी। पटना के बापू सभागार में 'प्रधानमंत्री किसान उत्सव दिवस' के आयोजन के दौरान केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान, उपमुख्यमंत्री व कृषि मंत्री विजय कुमार सिन्हा सहित कई गणमान्य मंत्री और अधिकारी के सामने तकरीबन 5000 से अधिक किसानों ने भाग ले कर चुनावी समा बांध दी।

खालिस्तान समर्थक सांसद अमृतपाल डोप टेस्ट के लिए तैयार

● वकील बोले-जो नेता नशे का आरोप लगा रहे वह भी टेस्ट करवाएं

चंडीगढ़ (एजेंसी)। असम की डिब्रूगढ़ जेल में राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत बंद खडूर साहिब से सांसद और वारिस पंजाब दे संगठन के प्रमुख अमृतपाल सिंह ने अपने ऊपर लगे नशे के आरोपों पर बड़ा बयान दिया है। उनके वकील इमान सिंह खरा ने मंगलवार को कहा कि अमृतपाल सिंह डोप टेस्ट के लिए पूरी तरह तैयार हैं और चाहते हैं कि वे नेता भी अपना डोप टेस्ट करवाएं जो उन पर नशे के आरोप लगा रहे हैं।

अरुण जेटली ने किसान कानून पर लोगों को धमकाया था

● राहुल बोले-उन्होंने कहा था विरोध करोगे तो कार्रवाई होगी

बेटे ने कहा-उनकी मौत के सालभर बाद यह कानून आया

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने शनिवार को किसान कानून और सरकार का विरोध करने पर पूर्व वित्त मंत्री अरुण जेटली पर धमकाने का आरोप लगाया। राहुल ने कहा कि मुझे याद है कि जब मैं किसान विरोधी कानूनों के खिलाफ लड़ रहा था, तो अरुण जेटली को मुझे धमकाने के लिए भेजा गया था। राहुल ने बताया कि जेटली ने उनसे कहा था कि तुम सरकार के खिलाफ विरोध करना जारी रखोगे और किसान कानूनों के खिलाफ लड़ोगे तो तुम्हारे खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा, इसके बाद मैंने जेटली की तरफ देखा और कहा कि आपको कोई भी आइडिया नहीं है कि आप किससे बात कर रहे हैं।

● **जो हमारे बीच नहीं,उनके लिए सोच-समझकर बोलना चाहिए-** रोहन जेटली ने कहा कि ऐसे लोग जो अब हमारे बीच नहीं हैं, उनके बारे में बोलते वक्त सोच-समझकर बोलना चाहिए। राहुल गांधी ने पहले भी मनोहर परिकर जी के अंतिम दिनों पर भी राजनीति की थी, जो बहुत ही गलत था। भाजपा सांसद अनुराग ठाकुर ने कहा कि मैं राहुल गांधी को याद दिलाना चाहता हूं कि अरुण जेटली जी का निधन 24 अगस्त 2019 को हुआ था, जबकि कृषि कानून 17 सितंबर 2020 को लोकसभा और 20 सितंबर 2020 को राज्यसभा में पास हुए थे। जब ये बिल संसद में लाए गए, तब तक अरुण जेटली जी का निधन हो चुका था। अरुण जेटली भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता रहे हैं। वे मोदी सरकार में वित्त मंत्री थे।

महाराष्ट्र में भाषा के बाद अब जमीन पर 'खेला'

● राज ठाकरे ने चल दिया है नया दांव, मोदी-शाह निशाने पर

कहा-अगर आपकी भाषा-जमीन चली गई तो कोई ठिकाना नहीं

मुंबई/रायगढ़ (एजेंसी)। महाराष्ट्र में हिंदी-मराठी भाषा विवाद और फिर गुजरात ी साइन बोर्ड हटवाने के बाद मनसे चीफ राज ठाकरे ने अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह को निशाने पर लिया है। शनिवार को रायगढ़ में एक सभा को संबोधित करते हुए मनसे चीफ राज ठाकरे ने कहा कि प्रधानमंत्री के गुजरात में महाराष्ट्र के लोग खेती की जमीन क्यों नहीं खरीद सकते। राज कारे ने किसान की सभा में पहले रायगढ़ जिले के हालात पर टिप्पणी की।

इसके बाद राज ठाकरे ने बताया कि महाराष्ट्र के लोग गुजरात में खेती की जमीन क्यों नहीं खरीद सकते। राज ठाकरे ने सभा में कहा कि मैं हिंदी के मुद्दे पर बात करने आया था। मैंने पूछा, क्या गुजरात में हिंदी है। प्रधानमंत्री और गृह मंत्री दोनों गुजरात से हैं। अमित शाह ने कहा, मैं हिंदी भाषी नहीं हूं। मैं गुजराती हूं। देश के गृह मंत्री जोर देकर कहते हैं कि मैं हिंदी भाषिक नहीं, मैं गुजराती हूं। राज ठाकरे ने कहा कि मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद कई परियोजनाएं गुजरात चली गईं। डायमंड प्रोजेक्ट भी चला गया। हर कोई राज्य से प्यार करता है। हम संकीर्ण सोच वाले क्यों हैं। राज ठाकरे ने पूछा। जब मैंने पूछा, क्या गुजरात में हिंदी है। उन्होंने कहा, नहीं।

● **भाषा के बाद जमीन का कार्ड खेला-** राज ठाकरे ने कहा कि हर कोई अपने राज्य के बारे में सोच रहा है। तो हम ऐसा क्यों न करें। मुझे नहीं पता कि रायगढ़ में कौन आकर जमीन खरीदता है। उत्तर भारत के कई अमीर लोग कोंकण में जमीन खरीद रहे हैं। हमारे अपने लोग इसे खरीद रहे हैं। लोगों को नहीं पता कि हमारा अंत इसी स्थिति में होगा। राज ठाकरे ने गुजरात में कृषि भूमि खरीद का मामला ऐसे वक्त पर उठाया है जब महाराष्ट्र में भाषा विवाद पहले से ही तूल पकड़े हैं। महाराष्ट्र और गुजरात दोनों राज्यों में गुजराती और मराठी लोग रहते हैं। राज ठाकरे ने कहा कि समझिए उनकी राजनीति क्या कर रही है। एक बार आपकी भाषा और ज़मीन चली गई, तो दुनिया में आपका कोई ठिकाना नहीं रहेगा। उन्होंने आगे कहा कि गुजरात में कृषि भूमि से संबंधित गुजरात काश्तकारी और कृषि अधिनियम के अनुसार अगर आप गुजरात के निवासी या अनिवासी भारतीय नहीं हैं, तो आप गुजरात में जमीन नहीं खरीद सकते। इसका मतलब है कि आप कल गुजरात में जमीन नहीं खरीद सकते। कोई भी नागरिक उस राज्य में जमीन नहीं खरीद सकता जहां से प्रधानमंत्री और गृह मंत्री आते हैं।

राज्य के विकास में मुख्यमंत्री और विस अध्यक्षों के योगदान से नई पीढ़ी को परिचित कराना जरूरी

विधानसभा अध्यक्ष नरेन्द्र सिंह तोमर ने भी की पुष्पांजलि अर्पित, विधानसभा सेंट्रल हॉल में हुआ कार्यक्रम

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अविभाजित मध्यप्रदेश के पहले मुख्यमंत्री रहे पं. रविशंकर शुक्ल की जयंती पर शनिवार को विधानसभा के सेंट्रल हॉल में उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया। विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर, सहकारिता मंत्री श्री विश्वास सारंग, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर, पंचायत और ग्रामीण विकास राज्यमंत्री श्रीमती राधा सिंह, विधायक श्री भगवानदास सबनानी सहित जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

विधानसभा अध्यक्ष श्री तोमर की पहल स्वागत योग्य- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश गठन के बाद पहले मुख्यमंत्री रहे पं. रविशंकर शुक्ल ने प्रदेश के विकास के लिए आधारभूत रूप से जो कार्य आरंभ किया, उस नींव पर ही प्रदेश के वर्तमान स्वरूप ने आकार लिया है। विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर द्वारा राज्य के श्रद्धेय मुख्यमंत्री और विधानसभा अध्यक्षों की जयंती पर उन्हें स्मरण करने की परम्परा आरंभ करने की पहल स्वागत योग्य है। राज्य के विकास में इन पुण्यात्माओं के योगदान से नई पीढ़ी को परिचित कराने में उनके स्मरण का यह नवाचार सहायक होगा।

विधानसभा अध्यक्ष ने मीडिया से चर्चा की- विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि प्रदेश के श्रद्धेय मुख्यमंत्री और विधानसभा अध्यक्षों के योगदान का स्मरण किया जाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि 1 नवंबर 1956 को मध्यप्रदेश राज्य का गठन हुआ। प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री श्रद्धेय पं. रविशंकर शुक्ल जी के जीवन और संघर्ष से हम सभी प्रेरणा लेते हैं। आज उनकी जयंती है, उन्हें स्मरण कर ईश्वर से यही प्रार्थना है कि हम सभी को उनके बताए मार्ग पर चलने की शक्ति और सामर्थ्य प्रदान करें।

योगी को मालेगांव ब्लास्ट केस में फंसाने की साजिश थी

साध्वी प्रज्ञा बोलीं– नाम लेने के लिए मुझे टॉर्चर किया था, मैं नहीं झुकी

भोपाल/मुंबई (नप्र)। महाराष्ट्र के मालेगांव ब्लास्ट केस में बरी भाजपा की पूर्व सांसद साध्वी प्रज्ञा ठाकुर ने शनिवार को मुंबई में बड़ा दावा किया। उन्होंने कहा, योगी आदित्यनाथ का नाम जबरन लेने के लिए दबाव बनाया गया था। साध्वी प्रज्ञा ने जेल में बिताए अपने दिनों को याद करते हुए कहा, एटीएस अधिकारियों ने मुझे 13 दिनों तक अवैध रूप से रखा। इस हिरासत के दौरान मुझे जितनी यातनाएं दी गईं, ऐसे अत्याचार किए गए जिसके लिए शब्द कम पड़ जाएंगे। शब्दों की भी अपनी मर्यादा होती है।

मुझे नरेंद्र मोदी, योगी आदित्यनाथ, मोहन भागवत, सुदर्शन, इंद्रेश, रामजी माधव जैसे लोगों के नाम लेने के लिए मजबूर किया जाता था। वे कहते रहे कि इन लोगों के नाम लो तो हम तुम्हें नहीं मारेंगे। उनका मुख्य उद्देश्य मुझे प्रताड़ित करना था। मुझसे सब कुछ असत्य बोलने के लिए कहा जा रहा था। इसलिए मैंने किसी का नाम नहीं लिया। मालेगांव केस में एक प्रमुख गवाह मिलिंग जोशीराव ने भी यही दावा किया। मिलिंद ने बताया, एटीएस ने यूपी सीएम योगी आदित्यनाथ और अन्य आरएसएस पदाधिकारियों का नाम लेने के लिए दबाव बनाया था। इसके लिए हिरासत में प्रताड़ित किया था।

बहुत कुछ कहलवाना चाहा, लेकिन हमने असत्य नहीं बोला

साध्वी प्रज्ञा ठाकुर ने कहा, कई एटीएस अधिकारियों ने कानून के नाम पर गैर कानूनी काम किए हैं। जेल में मुझे मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया गया। इन लोगों ने प्रताड़ित करके बहुत कुछ कहलवाना चाहा, लेकिन हम असत्य बोलेंगे नहीं। राष्ट्र को भयभीत होने की जरूरत नहीं है। देशभक्त अपने देश के लिए जीता और मरता है।

हिंदू धर्म को बदनाम करने का प्रयास किया

साध्वी प्रज्ञा ने कोर्ट के फैसले पर कहा, धर्म की, सत्य की जीत होती ही है और सत्य की जीत हुई है। मैंने कहा था सत्यमेव जयते, सत्य कभी भी पराजित नहीं होता। जो सत्य था वो मेरे साथ था। भगवा की विजय हुई, सनातन की विजय हुई, राष्ट्र की विजय हुई। विधर्मियों का नाश हुआ है। इन लोगों में इतना दम नहीं कि पराजित कर सकें। इन लोगों ने प्रताड़ित कर भगवा और हिंदू धर्म को बदनाम करने का कुत्सित प्रयास किया है। ऐसे लोगों को दंड दिलवाने का हम प्रयास करेंगे। यह पूरा केस गढ़ा गया था, इसका कोई आधार नहीं था। सत?य प्रकट और सिद्ध होता है, इस केस में भी ऐसा हुआ।

पूरा कांग्रेस ने अपने षडयंत्रों के लिए बनाया था

पूर्व सांसद ने कहा, ये पूरा केस कांग्रेस ने अपने षड्यंत्रों के लिए बनाया था और अगर कोई चीज बनावटी होती है तो उसका कोई आधार नहीं होता इसलिए इस केस का भी कोई आधार नहीं था। कांग्रेस न कभी देशभक्त पार्टी बन पाई है और न कभी बन पाएगी। जो हुआ है वह होना सुनिश्चित था, बहुत कुछ झेला, कष्ट सहे, बहुत कुछ किया।

स्विमिंग पूल निर्माण में अनियमितता के प्रकरण पर होगी सख्त कार्रवाई

भोपाल (नप्र)। आयुक्त नगरीय प्रशासन एवं विकास श्री संकेत भोंडवे ने बुरहानपुर नगर निगम में स्विमिंग पूल निर्माण कार्य में पाई गई अनियमितताओं को गंभीरता से लिया है। उन्होंने आयुक्त नगर निगम बुरहानपुर को निर्देशित किया है कि उक्त प्रकरण में संदिग्ध पाए गए सेवानिवृत्त उपयंत्री श्री सगीर अहमद एवं उपयंत्री श्री अमित गंगराड़े से जांच में पूर्ण सहयोग प्राप्त किया जाए। दोनों से यह अपेक्षा की गई है कि वे निर्धारित समयावधि में अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत करें।

नगरीय प्रशासन आयुक्त ने यह भी स्पष्ट किया है कि यदि उक्त अधिकारी जांच में अपेक्षित सहयोग नहीं करते हैं, तो जांच प्रक्रिया को एकपक्षीय रूप से आगे बढ़ाया जाये। इसी क्रम में, नगर निगम बुरहानपुर में वर्तमान में पदस्थ उपयंत्री अशोक पाटिल के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई करने के निर्देश भी संबंधित अधिकारियों को दिए गए हैं।

आयुक्त श्री भोंडवे का कहा है कि नगरीय कार्यों में पारदर्शिता और उत्तरदायित्व सुनिश्चित करने के लिए किसी भी प्रकार की अनियमितता को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

नागरिक सहभागिता को बढ़ावा देने के लिये नवाचार- नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग के आयुक्त श्री संकेत भोंडवे ने नगरीय क्षेत्रों में आम जनता की सहभागिता बढ़ाने के लिए एक नवाचार की शुरुआत की है। इसके तहत, उन नागरिकों से आवेदन मंगाए गए हैं जो सड़क निर्माण, पेयजल आपूर्ति, सीवरेज सिस्टम जैसे निर्माण कार्यों में दक्षता रखते हैं।

नगरीय प्रशासन आयुक्त ने इस पहल के बारे में बताते हुए कहा कि, यह पहल नगरीय निकायों में निर्माण कार्यों की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने में सहायक सिद्ध होगी। नागरिकों की सहभागिता से कार्यों में पारदर्शिता और कार्यक्षमता बढ़ेगी। साथ ही स्थानीय लोगों की जरूरतों और प्राथमिकताओं को बेहतर ढंग से समझा जा सकेगा। इच्छुक नागरिक अपने आवेदन को ई-मेल के माध्यम से भेज सकते हैं। आवेदन भेजने के लिए ई-मेल आईडी द्गठ्ठष्ठद्बश्चह्वह्ल्ड्डठ्ठ.द्दश्1.द्बठ्ठ का उपयोग किया जा सकता है। नगरीय विकास आयुक्त ने यह भी आशा व्यक्त की कि यह कदम राज्य के नगरीय विकास में सुधार लाएगा और नागरिकों को अधिक सक्रिय रूप से शामिल करने में मदद करेगा।

सागर में बनेगा टाटा अस्पताल की तर्ज पर कैंसर हास्पिटल, मुख्यमंत्री करेंगे भूमिपूजन

उपमुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने 24 करोड़ रुपये से अधिक लागत के कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन किया

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री और सागर जिले के प्रभारी मंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा कि सागर में वर्षों पुरानी मांग को पूर्ण करते हुए 80 करोड़ रुपये की लागत से टाटा अस्पताल, मुंबई की तर्ज पर आधुनिक कैंसर अस्पताल की स्थापना की जाएगी। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा अगले माह इसका भूमिपूजन किया जाएगा। अस्पताल में सभी अत्याधुनिक चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध होंगी जिससे बुंदेलखंड क्षेत्र के मरीजों को अब दिल्ली, भोपाल या मुंबई जाने की आवश्यकता नहीं होगी।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि सरकार भवन के लिए पैसा दे सकती है, लेकिन उसमें आत्मा डॉक्टर और पैरामेडिकल स्टाफ ही डाल सकते हैं। उन्होंने कहा कि डॉक्टर समाज में सर्वोपरि स्थान रखते हैं, वे समाज का दिल जीतें और मरीजों को समय पर उपयुक्त इलाज उपलब्ध कराएँ। उन्होंने कहा कि मातृ-शिशु मृत्यु दर को कम करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में गर्भावस्था के पहले माह से ही परीक्षण शुरू हो, इसके लिए आशा कार्यकर्ता, एएनएम और मेडिकल अधिकारियों को प्रशिक्षित किया जाएगा। उन्होंने यह भी बताया कि सरकार द्वारा टेलीमेडिसिन सेवा को और बेहतर करने के लिए डॉक्टरों को प्रति परीक्षण 50 रुपये की प्रोत्साहन राशि दी जाएगी। साथ ही प्रदेश में 30,000 से अधिक डॉक्टर, मेडिकल और पैरामेडिकल स्टाफ की भर्ती की जा रही है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल

ने जिला चिकित्सालय सागर परिसर में 100 बिस्तरों वाले नवीन महिला एवं शिशु रोग विभाग तथा एकीकृत पब्लिक हेल्थ लैब का लोकार्पण किया। इसके साथ ही बुंदेलखंड मेडिकल कॉलेज में क्रिटिकल केयर यूनिट के निर्माण हेतु भूमि पूजन भी किया।

खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने कहा कि डॉक्टर भगवान का स्वरूप होते हैं, वे इस उपाधि को बनाए रखें और जनमानस को सर्वोत्तम स्वास्थ्य लाभ दें। उन्होंने कहा कि सागर को सुंदर, स्वस्थ संभाग एवं बुंदेलखंड बनाने के लिए मध्य प्रदेश की सरकार लगातार वचनबद्ध है और इस प्रकार हो रहा है। सांसद डॉ. लता वानखेड़े ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा सागर को स्वास्थ्य का हब बनाने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। जिसके माध्यम से अच्छी से अच्छी स्वास्थ सुविधा उपलब्ध होगी। उन्होंने कहा कि यह अस्पताल माता बहनों एवं शिशुओं के लिए मील का पत्थर साबित होगी और यह अस्पताल नारी सशक्तिकरण के लिए एक उदाहरण होगी उन्होंने कहा कि मानव जीवन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है इसे बचा कर रखें। विधायक श्री शैलेन्द्र जैन ने कहा कि आज का यह लोकार्पण माताओं, बहनों और शिशुओं के लिए हैं इससे मातृ व शिशु मृत्यु दर अवश्य कम होगी और उनका समय पर उपचार मिल सकेगा।उन्होंने कहा कि सागर में मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के द्वारा अगली माह कैंसर अस्पताल की सौगात दी जा रही है वह यह सागर के इतिहास में मील का पत्थर साबित होगी और अच्छी से अच्छा इलाज पर हो सकेगा।

भारत बनेगा विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था : प्रधानमंत्री

पीएम ने किसानों के बैंक खातों में पीएम किसान सम्मान निधि की 20वीं किस्त हस्तांतरित की

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि हमारी सरकार निरंतर किसानों की खुशहाली के लिए काम कर रही है। वर्ष 2019 में पीएम किसान सम्मान निधि की शुरुआत हुई थी। योजना के तहत पौने चार लाख करोड रुपए किसानों के बैंक खातों में जमा किए गए हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी में आयोजित पीएम किसान सम्मान निधि योजना की राशि किसानों के बैंक खातों में हस्तांतरण के कार्यक्रम में यह बात कही। उन्होंने 20वीं किस्त के रूप में 9 करोड़ 70 लाख से अधिक किसानों को 20 हजार 500 करोड रुपए की सम्मान राशि का हस्तांतरण किया। साथ ही शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, बुनियादी ढांचे और किसान कल्याण पर केंद्रित 2,183 करोड़ रुपये की लागत वाली विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया।

किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बना रही है किसान सम्मान निधि योजना - मंत्री श्री कंषाना- मध्यप्रदेश के किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री श्री ऐंदल सिंह कंषाना कृषि उपज मंडी करोंद में पीएम किसान दिवस में आयोजित कार्यक्रम से वर्चुअली शामिल हुए। मंत्री श्री कंषाना ने कहा कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना फरवरी 2019 में केंद्र सरकार द्वारा लागू की गई थी। इसके तहत किसानों को आर्थिक रुप से सशक्त बनाने के लिए साल भर में 6 हजार रुपये की आर्थिक सहायता प्रदाय की जाती है। आज 2 अगस्त का दिन हम सभी के लिये फिर खुशहाली लेकर आया है क्योंकि आज के दिन को हम पीएम किसान दिवस के रूप में मना रहे हैं। यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जिनका नारा है सबका साथ सबका विकास के साथ देश को आगे बढ़ा रहे हैं। पीएम किसान सम्मान निधि की 20 वी किश्त के रूप में भारत के लगभग 9 करोड़ 70 लाख किसानों को 20 हजार 500 करोड़ रूपये की राशि में से मध्यप्रदेश के 87 लाख 93 हजार किसानों को 7 हजार 39 करोड की राशि बनारस से सीधे उनके खातों में डाली जा रही है। इससे पहले किसान सम्मान निधि से 10 हजार करोड़ किसानों को 3.69 लाख करोड़ की राशि दी जा चुकी है।

मंत्री श्री कंषाना ने कहा कि यह सम्मान निधि किसानों के लिए आर्थिक सक्षमता ही नहीं बल्कि उनका सम्मान भी है। आज 2 अगस्त 2025 को देश के सभी राज्यों में राज्य स्तर, जिला स्तर, विकास खण्ड स्तर, एवं ग्राम पंचायत स्तर पर भी पीएम किसान दिवस के रूप में कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। इसी अनुक्रम में हम सभी एकत्रित हुये हैं। इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री मोदी एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। उन्होंने देश एवं प्रदेश को मजबूत बनाने की दिशा में कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए अपील की। कार्यक्रम में सचिव कृषि श्री निशांत बरबड़े, संचालक श्री अजय गुप्ता, प्रबंध संचालक मंडी बोर्ड श्री कुमार पुरुषोत्तम, जनप्रतिनिधि सहित बड़ी संख्या में किसान सम्मिलित हुए।

वाहनों में हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट लगाने चलेगा अभियान

भोपाल (नप्र)। प्रदेश के पंजीकृत वाहनों में हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट (एचएसआरपी) अनिवार्य रूप से लगाए जाने के लिए विशेष अभियान चलाया जायेगा। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने राज्य सरकारों को इस आशय के आदेश दिये है। प्रदेश में एक अप्रैल 2019 के बाद पंजीकृत वाहनों में एचएसआरपी नंबर प्लेट लगाई जा रही है। सुप्रीम कोर्ट ने कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए है।

केन्द्र सरकार के सड़क परिवहन एवं राज्यमार्ग मंत्रालय की अधिसूचना 4 दिसम्बर 2018 के अनुसार एक अप्रैल 2019 के बाद सभी पंजीकृत वाहनों में एचएसआरपी प्लेट लगाई जाना अनिवार्य है। वाहन पोर्टल में डाटा अपडेट करने के काम में तेजी लाई जा रही है। परिवहन विभाग ने परिवहन आयुक्त को इस कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिए है। प्रदेश भर में दल गठित कर संबंधित वाहन डीलर के माध्यम से एनआईसी वाहन पोर्टल पर अद्यतन स्थिति दर्ज की जायेगी। इसके लिये एक विशेष अभियान चलाया जायेगा।

तीन माह में हो नम्बर प्लेट बदलने का कार्य- परिवहन विभाग ने एचएसआरपी प्लेट बदलने का कार्य आगामी 3 माह में पूर्ण करने के निर्देश जिला परिवहन अधिकारियों को दिए है। निर्देश में कहा गया है कि अपने जिले के समस्त डीलरों से निरंतर सम्पर्क में रहते हुए वाहनों में एचएसआरपी नम्बर प्लेट लगाई जाए। जिन वाहनों में एचएसआरपी नहीं है उन्हें पॉल्यूशन अंडर कंट्रोल सेंटर द्वारा प्रमाण पत्र, डुप्लीकेट पंजीकरण प्रमाण पत्र (आरसी) जारी करने, पंजीकरण प्रमाण पत्र में पता बदलना, शुल्क देकर आरसी विवरण देखना संभव नहीं हो सकेगा। साथ ही वाहनों के स्वामित्व बदलने, हाइपोथिकेशन जोड़ना और हटाना, नवीन-डुप्लीकेट परमिट जारी करना, परमिट का हस्तांतरण और नवीनीकरण, कराधान प्राधिकार के साथ अनापत्ति प्रमाण पत्र जारी करना और वाहन का पंजीयन निरस्तीकरण करना संभव नहीं हो सकेगा।

निर्देश में कहा गया है कि वाहन की स्थाई-अस्थायी अनुज्ञाएं जारी करने, डुप्लीकेट फिटनेस प्रमाण पत्र जारी करने, वाहनों का फिटनेस प्रमाण पत्र जारी करना, वाहनों के पंजीयन नवीनीकरण करने के साथ ही वाहन पोर्टल के माध्यम से दी जाने वाली सभी सुविधाएं मोटर मालिकों को नहीं मिल सकेंगी।

मंत्री ने स्वीकारा- स्विमिंग पुल बना, पर पानी नहीं ठहरता

कमिश्नर नगरीय विकास ने मांगी बुरहानपुर निगमायुक्त से रिपोर्ट, इंजीनियरों पर होगा एक्शन

भोपाल (नप्र)। विधानसभा में बुरहानपुर नगर निगम द्वारा बनाए गए स्विमिंग पुल का मामला उठने के बाद नगरीय विकास और आवास विभाग अब इस मामले में सख्त कार्रवाई की तैयारी में हैं। विधायक अर्चना चिटनीस के सवाल के जवाब में नगरीय विकास मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने स्वीकार किया है कि स्विमिंग पुल निर्माण में गड़बड़ी हुई है।

स्विमिंग पुल का निर्माण जहां किया गया है वहां पानी का कोई स्रोत ही नहीं है। इतना ही नहीं इस स्विमिंग पुल में पानी ठहरता ही नहीं है। इस वजह से इसे भर पाना संभव नहीं है। इसके बाद नगरीय विकास विभाग के कमिश्नर ने डेढ़ करोड़ की लागत से बनाए गए इस स्विमिंग पुल की जांच रिपोर्ट बुरहानपुर नगर निगम आयुक्त से मांगी है ताकि कार्रवाई की जा सके। गड़बड़ी की जांच के लिए तीन माह पहले एक समिति गठित की गई है। गौरतलब है कि वर्ष 2011 में इस स्विमिंग पुल की स्वीकृति मिली थी। तब इसकी लागत 1.35 करोड़ रुपए थी जो इसके पूरा होते तक 1.51 करोड़ तक पहुंच गई।

सड़क, पेयजल, सीवरेज सिस्टम में रुचि रखने वालों से मांगे आवेदन

नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग के आयुक्त संकेत भोंडवे ने नगरीय क्षेत्रों में आम जनता की सहभागिता बढ़ाने के लिए एक नवाचार की शुरुआत की है। इसके अंतर्गत उन नागरिकों से आवेदन मंगाए गए हैं जो सड़क निर्माण, पेयजल आपूर्ति, सीवरेज सिस्टम जैसे निर्माण कार्यों में दक्षता रखते हैं। भोंडवे ने इस पहल के बारे में बताते हुए कहा कि, यह पहल नगरीय निकायों में निर्माण कार्यों की गुणवत्ता को तय करने में सहायक सिद्ध होगी। नागरिकों की सहभागिता से कार्यों में पारदर्शिता और कार्यक्षमता बढ़ेगी, साथ ही स्थानीय लोगों की जरूरतों और प्राथमिकताओं को बेहतर ढंग से समझा जा सकेगा।

वर्तमान सब इंजीनियर सस्पेंड, बाकी जांच के दायरे में

नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग के आयुक्त संकेत भोंडवे ने बुरहानपुर नगर निगम में स्विमिंग पूल निर्माण कार्य में पाई गई गड़बड़ी को गंभीरता से लेते हुए कार्रवाई का फैसला किया है। भोंडवे ने नगर निगम बुरहानपुर के आयुक्त को निर्देशित किया है कि इस प्रकरण में संदिग्ध पाए गए सेवानिवृत्त उपयंत्री सगीर अहमद एवं सेवानिवृत्त उपयंत्री अमित गंगराड़े से जांच में पूर्ण सहयोग लिया जाए। दोनों से यह अपेक्षा की गई है कि वे तय समयावधि में अपनी रिपोर्ट देंगे। भोंडवे ने यह भी स्पष्ट किया है कि यदि दोनों अधिकारी जांच में अपेक्षित सहयोग नहीं करते हैं, तो जांच प्रक्रिया को एकपक्षीय रूप से आगे बढ़ाया जाएगा। इसके साथ ही नगर निगम बुरहानपुर में वर्तमान में पदस्थ उपयंत्री अशोक पाटिल के विरुद्ध अनुशासनात्मक कार्रवाई करने के निर्देश भी संबंधित अधिकारियों को दिए गए हैं। भोंडवे का कहना है कि नगरीय कार्यों में पारदर्शिता और उत्तरदायित्व तय करने के लिए किसी भी प्रकार की अनियमितता को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

'मछली' परिवार की संपत्ति की जानकारी जुटा रहा प्रशासन

6 अवैध निर्माण तोड़ चुके, एक कोठी सील, एसडीएम बोले–जांच के लिए टीम लगाई

भोपाल (नप्र)। भोपाल में ड्रग्स तस्करी के आरोप में यासीन और उसके चाचा शाहवर मछली के पुलिस के हत्थे चढ़ने के बाद अब इनके परिवार के अवैध निर्माण पर प्रशासन का बुलडोजर चल रहा है। 4 दिन पहले 6 अवैध निर्माण प्रशासन तोड़ चुका है और एक कोठी सील की थी। अब ऐसी और संपत्ति के बारे में पता लगाया जा रहा है, जो अवैध हो, सरकारी जमीन पर बनी हो या किसी से छिनी गई हो।

हुजूर एसडीएम विनोद सोनकिया ने बताया कि राजस्व निरीक्षक और पटवारियों की टीम जांच कर रही है। मछली परिवार की अन्य संपत्ति के बारे में पता लगा रहे हैं। क्या ये सरकारी जमीन पर बनाई गई है? इसकी पड़ताल कर रहे हैं। इसके बाद उन्हें भी तोड़ने की कार्रवाई करेंगे।

तीन मंजिला कोठी की सामान शिफ्टिंग के लिए दिया समय

मछली परिवार की एक तीन मंजिला कोठी को प्रशासन ने सील किया है। कुछ सामान 30 जुलाई को ही खाली करवा दिया गया था, लेकिन सुप्रीम कोर्ट के आदेश का पालन करते हुए प्रशासन ने नियमानुसार रियासत दी है। एसडीएम सोनकिया ने बताया कि जैसे ही अवधि खत्म होगी, कोठी को तोड़ने की कार्रवाई भी शुरू करेंगे।

50 एकड़ में किया था अवैध कब्जा

बता दें कि 30 जुलाई को भारी भरकम पुलिस अमले के साथ जिला प्रशासन और नगर निगम की टीम ने मछली परिवार की अवैध संपत्ति पर कार्रवाई की थी। यहां करीब 50 एकड़ सरकारी जमीन पर अवैध रूप से बने फॉर्म हाउस, वेयर हाउस, फैक्ट्री और मकान को तोड़ा गया। हताईखेड़ा में अवैध ठिकानों को तोड़ने की कार्रवाई के दौरान एक कोठी को सील किया गया था। अवैध संपत्ति की कुल कीमत 100 करोड़ रुपए आंकी गई थी।

चाचा–भतीजा क्राइम ब्रांच की गिरफ्त में आए

दरअसल, रेप और ब्लैकमेलिंग केस में शाहवर मछली और उसके भतीजे यासीन को क्राइम ब्रांच ने गैमन मॉल के पास से घेराबंदी कर गिरफ्तार किया था। तलाशी में उनके पास से तीन ग्राम एमडी ड्रग, एक देशी पिस्टल बरामद हुई थी। यासीन के मोबाइल में ऐसे वीडियो भी मिले हैं, जिनमें वह युवकों को निर्वस्त्र कर बेरहमी से पीटता दिख रहा है। मोबाइल में युवतियों के आपत्तिजनक वीडियो भी पाए गए।

पुलिस रिमांड में पूछताछ के दौरान दोनों ने चौंकाने वाले खुलासे किए थे। आरोपी राजस्थान से भी ड्रग लाते थे। सड़क के रास्ते नशे का सामान लाया जाता था। इसके बाद भोपाल के अलग-अलग पब और लाउंज में पुराने और भरोसेमंद फिक्स कस्टमरों तक ड्रग्स पहुंचाई जाती थी।

व्यंग्य

विनोद कुमार विक्की

लेखक व्यंग्यकार हैं।

भ्रष्टाचारियों का एकमात्र सहारा

कहते हैं कि बुरे वक्त में सगा-संबंधी और साया भी साथ छोड़ देता है, किंतु इस ब्रह्मांड मे एक जीव ऐसा भी है, जो बुरे से भी बुरा समय में बुरे से बुरा इंसान का भी साथ देता है। चोर, हत्यारा, बलात्कारी, हो अथवा उच्च स्तरीय भ्रष्टाचारी अत्याचारी। भले ही घर-परिवार, समाज की नजरों में पतित बहिष्कृत और दोषी क्यों न हो, लेकिन इन सारे दुर्गुणों और अवगुणों को नज़रंदाज़ कर उनको निर्दोष मानने और साबित करने का वैधानिक दृष्टिकोण सिर्फ और सिर्फ न्यायिक जीव के पास होता है। ऐसा ही एक जीव हमारे मुहल्ले में रहते हैं, जो एडवोकेट बकबक पांडेय के नाम से प्रख्यात हैं। अधिनियम को जानने से ज्यादा बहस के दौरान अधिक बकने की प्रवृत्ति के कारण बकबक एडवोकेट को अधिवक्ता भी कहा जाता है।

दूसरे शब्दों में इन्हें कलयुग का कर्ण अथवा डिजिटल शकुनी कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि सारा सच जानते हुए भी बकबक जी दोषी, अपराधी अथवा गलत अभियुक्त का ना केवल साथ देते हैं, बल्कि उसे सही साबित करने के लिए ऐड़ी-चोटी का जोर लगा देते हैं। बकबक जी कवच कुण्डल के स्थान पर काला कोट धारण करते हैं। जिस प्रकार काला रंग अपने में सभी रंगों को अवशोषित कर लेता है, संभवतः इनका काला कोट न्यायिक प्रक्रिया के दौरान झूठ,गलत सहित अभियुक्तों के सभी काले कारनामों को अपने अंदर समाहित कर लेता है।

बकबक बाबू शब्दों के बादशाह हैं। शब्दों के साथ खेलते हुए सच को झूठ और झूठ को सच साबित करने वाले अद्भुत जादूगर है। बकबक जी की असीम कृपा और संवैधानिक ज्ञान से अगली तारीख, जमानत, बाइज्जत बरी आदि न्यायिक प्रक्रियाओं के द्वारा गैर कानूनी गतिविधियों में संलिप्त असमाजिक तत्वों को भी समाज में रहने और बने रहने का सम्मान और न्यायिक अवसर प्राप्त हो जाता है।

बकबक जी के संपर्क सूची में रोडपति से करोड़पति पेशेवर मित्रों की लंबी फेहरिस्त है, जिनकी एक सुनवाई की फीस पचास रुपए से लेकर पाँच लाख रुपए तक की होती है, जो केस की संजीदगी और मुवक्किल की आर्थिकी के हिसाब से तय होता है। आशय है कि निम्न वर्गीय, मध्यम वर्गीय और उच्च वर्गीय मुवक्किलों के लिए अलग-अलग पैकेज होता है। वकील, मुवक्किल और न्यायमूर्ति के बीच का कनेक्टिंग लिंक या संयोजक कड़ी होता है।जिनके न्याय की दुकान दीवारों और पेड़ की शाखाओं पर उनके नाम से लटकी तख्तियां और चार कुर्सी से घिरे एक टेबल के क्षेत्रफल वाले कचहरी परिसर से लेकर एसी कक्ष अथवा फोर स्टार अपार्टमेंट में अवस्थित उनका निवास स्थल तक होता है।

इनके मित्र सूची के चर्चित और समृद्ध न्यायदूतों के कार्यालय में सैकड़ों न्यायिक पुस्तकों से सुसज्जित पुस्तकालय एवं महिला असिस्टेंट की उपस्थिति उनके कार्यालयों की विशेष शोभा होते हैं।

जिस प्रकार मार्केट में बिसलेरी के नाम पर बेलसारी,बिसेलेरी, बिल्सरी,बिसलोरी, बिसालेरी आदि मिलते-जुलते दर्जनों नाम और पहचान वाली नक़ली मिनरल वॉटर उपलब्ध हैं और उसकी असली पहचान सिर्फ बादल नामक ऊंट को होती है, ठीक उसी प्रकार बकबक जी के मित्र मंडली के अनंत एल.एल.बी. डिग्री और काले कोट धारियों में से कुछ न्यायजीवी ही दीवानी और फ़ौजदारी मामलों के विशेषज्ञ हैं। जिसकी पहचान मुवक्किल को बादल बनकर करनी पड़ती है।

बकबक जी के पास सबूतों के फ्रेम और गवाहों के ग्लास से निर्मित रंग-बिरंगा चश्मा होता हैं। जिसे सुविधा अनुसार न्यायमूर्ति को पहनाते हैं और उसी चश्मे के आधार पर मुलजिम को मुजरिम या निर्दोष होने का प्रमाण-पत्र और न्याय मिलता है। ऐसा नहीं है कि काले कोट धारी बकबक पांडेय जी सिर्फ न्यायिक कार्य ही करते हैं, बल्कि स्थिति और परिस्थिति के अनुसार जनहित याचिका दायर करने, एफिडेविट बनाने और प्रमाण पत्रों को अभिप्रमाणित करने जैसा सामाजिक कार्य भी संपादित करते हैं।

यूँ तो बकबक जी सर्वसुलभ है, किन्तु फर्जी अथवा मामूली पुलिसिया केस में नामजद होने पर अथवा गैर कानूनी कृत्यों को अंजाम देने के बाद ही आपको ऐसे कृष्ण कोट धारी यशस्वी मानव के चारित्रिक दर्शन और उनकी छुपी हुई वास्तविक प्रतिभा के साक्षात्कार का सौभाग्य प्राप्त हो सकता है।

कविता

मौन समर्पण का इकरार

डॉ.वीरेंद्र प्रसाद

जब भी करती हो तुम सोलह श्रृंगार
मौन समर्पण का करते हो इकरार।
मुसकराती चाँदनी, खिलखिलाती धूप तुम
प्रीत का प्रतिबिंब, लाज का रूप तुम।
कजरारे नैन करते, कामना अभिसार
मौन समर्पण का करते हो इकरार।।

चंचल शिशु-सी भोली हँसी तुम्हारी
करद, बरद चितवन, बसी तुम्हारी।
देख कनकाचल तन, चकित संसार
मौन समर्पण का करते हो इकरार।।

शब्द है निःशब्द, मुखर तेरे श्रृंगार
भावना का रूप तेरा, कर रहा संचार।
प्रीतम का कर रहे नीरव सत्कार
मौन समर्पण का करते हो इकरार।।

अंधेरे के यहां

कमलेश कुमार दीवान

ये उजाले भी रहे साथ अंधेरें के यहां
सांझ फिर रात भी आएं सबेरे के यहां।

ठहर जाएं तो चलने के भी हौंसले आएं
खुशी भी खूब हो ग़म के बसेरे के यहां।

बिखरते जाएं तो जुड़ने के फैसले आएं
यूं तराशते रहे अपने को कसेरे के यहां।

अजीब बात है नदियां मचल रही है यहां
मछलियां आएं खुद अपने मछेरे के यहां।

कभी तो खूब गुलाबी ऊगे सूरज 'दीवान'
चांद चलते हुए आए फिर चितेरे के यहां।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

स्कूल का माई बाप होता है संस्था प्रधान

प्रसंगवश

दिनेश विजयवर्गीय

मैंने एक बार स्कूल की अच्छी छवि को लेकर एक लेख पढा था। 'हेड मास्टर बदल दो स्कूल बदल जाएगा' इस पंक्ति का यही आशय है कि यदि संस्था प्रधान स्कूल के प्रति समर्पित व जागरुक है तो स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों का चहुंमुखी विकास होगा और स्कूल भवन भी आकर्षित और सुविधा पूर्ण होगा।

पिछले दिनों झालावाड़ जिले के गांव पीपलोदी में स्कूल हादसे में बच्चों के भविष्य के सपने ,मौत के बंधन में बंध कर रह गए। कई बच्चे घायल हो गए। जो बच्चे इस दुर्घटना का शिकार हुए ,उन माता-पिता पर क्या गुजर रही होगी इसकी तो मात्र कल्पना की जा सकती है। आज भी हमारे प्रदेश के सैकड़ों विद्यालयों की दयनीय स्थिति है। कहीं दीवारें कमजोर हैं, कई छत टपकती है, कहीं प्लास्टर उखड़ा हुआ है। कहीं खेल मैदान नहीं और कहीं स्कूल परिसर पर अतिक्रमण। कहीं छात्र-छात्राओं के लिए अलग टॉयलेट नहीं तो कहीं बिजली व्यवस्था ठीक नहीं और कहीं शुद्ध पानी पीने की व्यवस्था अच्छी नहीं। ग्रामीण अंचल के कई स्कूलों में चार दिवारी नहीं। वहां पशु गंदगी फैला देते हैं।

स्कूल के जितने भी अभाव हैं उन्हें दूर करने के लिए संस्था प्रधान समर्पित भाव से संकल्पित होकर काम करें तो बहुत कुछ सफलता मिल सकती है। विद्यालय विकास समिति ,भामाशाह, सरपंच, विधायक, प्रशासन व स्कूल स्टाफ से सहयोग से लेकर स्कूल को अच्छा बनाने के लिए बहुत कुछ कर सकता है। विद्यालय विकास की सारी जिम्मेदारी संस्था प्रधान की होती है। जरूरत अनुसार वह अपने अधिकारियों को सूचित कर उचित हल निकाल सकता है। संस्था प्रधान के बाद जिम्मेदारी शिक्षा अधिकारी की बनती है। वह जब स्कूल निरीक्षण पर जाए तो उसे शैक्षिक स्थिति के साथ-साथ विद्यालय की स्थिति पर भी ध्यान देना चाहिए कि वह अध्ययन अध्यापन के लिए कितनी उचित है। वहां का वातावरण कैसा है।

सच तो यही है कि संस्था प्रधान ही स्कूल का सच्चा माई बाप होता है। वह और शिक्षा अधिकारी जागरूक रहें तो स्कूल की कई समस्याएं सहज ही दूर हो सकती हैं। इस तरह की ताल,मेल वाली व्यवस्था से भविष्य में ऐसी दुःखद घटना होने से बच सकेगी।

लघुकथाएं

प्रियंका सौरभ

बर्थडे केक

नीलिमा का जन्मदिन था। सबने बधाइयाँ दीं – पति ने केक मंगाया, बेटे ने गाना गाया। लेकिन नीलिमा की आँखें नम थीं।

कारण- उसे चॉकलेट नहीं, स्ट्रॉबेरी पसंद थी। पर हर साल चॉकलेट ही आता था।

यह छोटी सी बात नहीं थी – यह उसकी पसंद को न समझ पाने का प्रतीक था। शादी के बाद शायद किसी ने पूछा ही नहीं, क्या अच्छा लगता है?

उस रात उसने खुद के लिए एक स्ट्रॉबेरी केक ऑर्डर किया, और उस पर लिखा – 'तुम्हारे लिए, तुम्हारे द्वारा।'

अगले साल परिवार ने पूछा – 'क्या केक लाना है?' वह मुस्कुरा दी – 'सिर्फ मेरा पसंदीदा, स्ट्रॉबेरी।'

लौटती चिट्ठियाँ

अंजू ने शादी के बाद मायके चिट्ठियाँ भेजनी बंद कर दी थीं। सब कहते – फोन कर लो, क्या ज़रूरत है चिट्ठियों की?

पर एक दिन पुरानी अलमारी से एक लिफाफा मिला – माँ की चिट्ठी, अधूरी और बिना भेजी गई। उसमें लिखा था – तू चिट्ठियाँ भेजा कर, पढ़ने से लगता है तू पास है।

उस दिन अंजू ने फिर से चिट्ठी लिखी – माँ के लिए। जवाब आया – माँ की खुशबू से भीगी चिट्ठी।

अब हर महीने चिट्ठियाँ आती-जाती हैं – कागज़ पर रिश्तों की गर्मी लौटी है।

वेश्या की बेटी: 25 कहानियों का गुलदस्ता

पुस्तक समीक्षा

हेमंत पाल

समीक्षक

कहानी की कुछ किताबों के शीर्षक उनके कथानक से कहीं ज्यादा असरदार होते हैं। ऐसा ही एक संग्रह है 'वेश्या की बेटी' जो अपने आप में अलग है। इसमें 25 कहानियां हैं। हर कहानी का अपना संसार है। इसे कहानीकार नवीन कुमार ने पाठकों से बखूबी रू-ब-रू कराया है। विषय का चयन हमारी सामाजिक संरचना के अंतर्गत है। इसमें मानवीय मूल्यों को बखूबी देखा जा सकता है। सामाजिक विसंगतियों से भी अवगत कराया गया है। इस संग्रह की कहानियों ने कई सवाल भी उठाए हैं जो समीचीन हैं। कहानीकार ने लेखकीय धर्म निभाया है। ऐसे शब्दों का प्रयोग नहीं किया है जिसके अर्थ को समझने में कठिनाई हो। भाषा की सरलता कहानी को जीवंत बनाते हुए गति देती है।

इस संग्रह की पहली कहानी है वेश्या की बेटी। इसमें महिला और बेटी के दर्द को महसूस किया जा सकता है। समाज का एक वर्ग किस तरह से महिलाओं को देखता है और उसकी नजर में औरत एक भोग की वस्तु है। लेकिन इस नरक में धकेली गई महिलाओं की छटपटाहट को देखने के साथ साथ स्त्री के मनोविज्ञान को भी समझा जा सकता है। एक वेश्या की अपनी बेटी को इस नरक से निकालने की संघर्ष की भी कहानी है। वह तमाम वेश्याओं की प्रतिनिधि हैं। उसका संघर्ष प्रेरणादायक है। उसकी बेटी ने शिक्षा का सहारा लिया और इस सामाजिक कुरीति के खिलाफ शिक्षा को ही हथियार बनाया है। इसे आज की बेटियां इस्तेमाल करेंगी।

सुमेधा की जिद कहानी में सामाजिक विसंगतियां दिखती है। समाज में भेदभाव किस तरह से किसी का विकास रोक देता है उसे दर्शाया गया है। लेकिन सुमेधा ने अपनी जिद से जो राह चुनने का फैसला लिया है वह भी उसके समाज की महिलाओं को प्रेरित करने वाला है। किसी भी समाज में बदलाव के लिए ऐसे कठोर निर्णय लिए जाते हैं। सुमेधा ने बदलाव को एक नए राह पर लाने की कवायद की है। सरकार की बेरुखी से भी इसका समाजशास्त्र नहीं बदल रहा है। लेकिन सुमेधा ने बता दिया है कि समाज की लड़कियों को आगे आना ही पड़ेगा। सुमेधा की जिद एक परिवर्तनकारी निर्णय है।

'काली' कहानी पढ़कर कोई भी भावुक हो सकता है। इसमें एक पशु और मनुष्य के बीच मानवीय रिश्ते को बताया गया है। इस रिश्ते को कोई भी महसूस कर सकता है। यह कहानी पढ़ते हुए ऐसा लगता है कि मानवीय रिश्ते सिर्फ मनुष्य के बीच ही नहीं, पशुओं के साथ भी हो सकते हैं। काली गाय इस रिश्ते का एक उदाहरण बनी हैं। काली जिस परिवार में रहती है वहां तो उसका रिश्ता और अपनापन समाज को आकर्षित किया ही है और बाद में समाज ने इस रिश्ते को एक अलग रूप में स्थापित कर दिया।

कोरोना त्रासदी किसे याद नहीं होगा। उस त्रासदी को काफी संवेदनशील तरीके से कहानीकार ने पेश किया है। मुर्दाघर कहानी उसी त्रासदी की एक कहानी है। इसमें एक बेटे का अपनी मां के प्रति प्यार है जिसके लिए कोरोना के समय बेटे के अंदर मौत का खौफ खत्म हो गया है। वैसे भी मुर्दाघर लोग जाने से परहेज करते हैं। लेकिन एक बेटा इस मुर्दाघर में अपनी मां के लिए जो कुछ करता है वह सब इस कहानी में पढ़कर मानवीय त्रासदी को भी महसूस किया जा सकता है। कोरोना त्रासदी पर मुर्दाघर के अलावा एंबुलेंस को भी पढ़कर वह त्रासदी ताजा हो जाता है।

यह कहानी संग्रह नई दिल्ली के चर्चित प्रकाशक न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन ने प्रकाशित किया है। इसका कवर पेज बहुत ही आकर्षक है। यह किताब अमेज़न पर उपलब्ध है। इसे प्रकाशक से भी सीधे मंगाया जा सकता है। प्रकाशक ने इसे खूबसूरत तरीके से प्रकाशित किया है। इसकी कीमत 399 रुपये है। लेकिन यह अमेज़न पर 300 रुपये में उपलब्ध है। इतनी कम कीमत में 25 कहानियां एक उपहार की तरह है। इसकी हर कहानी पठनीय है और उसमें ऐसा प्रवाह है कि पाठक खुद को शामिल करने के लिए विवश रहेगा।

इस कहानी संग्रह की कहानियां पढ़कर यही महसूस होता है कि प्रस्तावना में फिल्म अभिनेता पंकज त्रिपाठी का सुझाव बिल्कुल सही है। उन्होंने पाठकों को इसकी कहानियां पढ़ने का सुझाव दिया है। जिस सकारात्मक भाव से उन्होंने सुझाव दिया है वह इस संग्रह में उपलब्ध है। संग्रह की सभी कहानियों में गहराई है। कहानीकार ने सभी कहानियों में सामाजिक और मानवीय मूल्यों को बखूबी पेश किया है। इन कहानियों की एक और खूबी है कि इसे परिवार का हर सदस्य पढ़ सकता है।

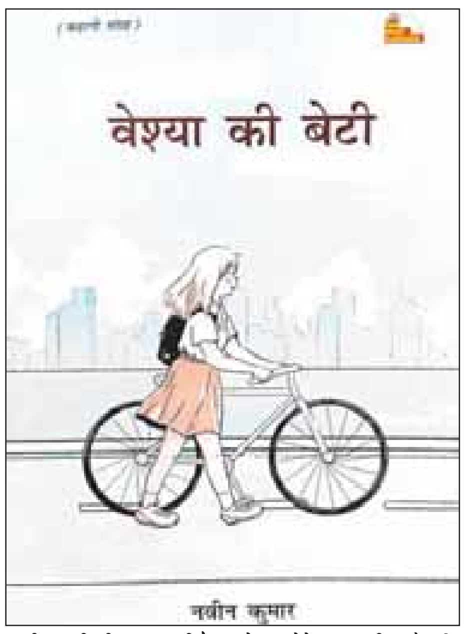

पुस्तक का नाम - वेश्या की बेटी
लेखक -नवीन कुमार
मूल्य -399 रुपए
प्रकाशक - न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली

कहानी

अर्विना गहलोत

होममेकर

पासागर आज ऑफ़िस की सीढ़ियां जल्दी-जल्दी चढ़कर सीधा बॉस के केबिन का दरवाज़ा खोला। वहाँ कोई नहीं था। सागर ने मेज़ पर अपना इस्तीफ़ा रखा और अपनी सीट पर आकर बैठ गया। वह बॉस के आने का इंतज़ार करने लगा।

समय के पाबंद हरीश जी ठीक नौ बजने से पहले ही आ गए। बॉस के केबिन में घुसते ही सागर के दिल की धड़कनें तेज़ हो गईं। बॉस मेरे इस्तीफ़े को स्वीकार तो कर लेंगे? वह सोच रहा था।

सागर सर, क्या सोच रहे हैं? बॉस ने आपको केबिन में बुलाया है।

सागर के कदम आज लड़खड़ा रहे थे।

सागर, बाहर क्यों खड़े हो? अंदर आ जाओ।

सर, गुड मॉर्निंग, सागर बोला।

गुड मॉर्निंग, बैठो। तुमसे बात करनी है। सागर, यह सब क्या है? अच्छी-भली नौकरी क्यों छोड़ रहे हो? ऐसा क्या हो गया है जो होममेकर बनकर जीना चाहते हो?

एक पुरुष के लिए आसान नहीं है होममेकर बनकर जीना। बहुत सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।

सागर, तुम मेरी बात मानो। मैं तुम्हारे त्याग-पत्र को अपने पास रख लेता हूँ। तुम इस बात का ज़िक्र अपनी पत्नी, दोस्त किसी से भी मत करना। तुम एक महीने छुट्टी पर रहकर देखो। अगर वापस लौटना चाहो तो मुझे सूचित कर देना।

सागर ऑफ़िस से निकलकर सीधा घर पहुँच गया। उसकी पत्नी रुचिरा ने पूछा, इतनी जल्दी कैसे आ गए?

मैंने बच्चे की देखभाल के लिए नौकरी छोड़ दी। तुम ही ने तो कहा था कि तुम्हारी तनख्वाह मुझसे ज़्यादा है इसलिए तुम नौकरी नहीं छोड़ सकती हो। मैंने छोड़ दी।

चलिए, अच्छा है। आज से हमारी कुक एक महीने की छुट्टी पर जा रही है। जब तक खाना बनाने वाली लौट नहीं आती, आप खाना-नाश्ता बना दिया करना।

यह सुनकर सागर को करंट-सा झटका लगा। रुचिरा चलते-चलते सागर से बोली, सुनो, मुझे तो ऑफ़िस के लिए निकलना है। शाम को मिलते हैं।

रुचिरा के जाते ही सागर ने कपड़े बदले, अपने लिए एक कप चाय बनाई और बालकनी में आकर खड़े होकर चाय पीने लगा।

सागर को बालकनी में खड़ा देखकर पड़ोसी ने पूछा, ÷सागर जी, सुना आपने नौकरी छोड़कर होममेकर बनने का फ़ैसला ले लिया है?

हाँ, आपने ठीक सुना है। मैंने नौकरी छोड़ दी। एक बात कहूँ, सागर जी, आपकी सोच और घर के प्रति समर्पित भाव का सम्मान करता हूँ। लेकिन एक डर मेरे मन में सर उठा रहा है, कहीं आपकी पत्नी का व्यवहार बदल न जाए। आदिकाल से ही पुरुष कमाता है और पत्नी घर चलाती है। ज़माना बदल गया है। अब दोनों ही कार्यक्षेत्र में हैं और घर और बच्चे उपेक्षित होते जा रहे हैं।

ईश्वर आपको होममेकर बनने में मदद करें, वैसे यह कार्य कोई आसान नहीं है। आस-पास के मर्द आपका मज़ाक भी बना सकते हैं। हो सकता है आपसे बात भी न करें। सागर जी, आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएँ इस नए पद के लिए।

सागर शर्मा जी को काम पर जाते हुए देख रहा था। उनकी कही हुई बातें दिमाग़ में घूमने लगीं। इस बीच सागर की चाय ठंडी हो चुकी थी। सागर ने बची हुई चाय एक ही घूँट में ख़त्म कर अंदर आ गया।समय का पहिया जैसे-जैसे घूम रहा था, सागर पर घर के कामों का बोझ बढ़ता जा रहा था। सागर हर काम बड़ी शिद्दत से कर रहा था–बच्चे को स्कूल ले जाना, उसे स्कूल से लाना, कपड़े बदलना, खाना खिलाकर सुलाना, उसका होमवर्क करवाना। लेकिन वह देख रहा था कि पत्नी अब उसकी पहले की तरह इज़्ज़त नहीं करती है।

आज सुबह उठते ही सागर ने घर के सारे काम निपटा दिए थे। बच्चे को तैयार करके स्कूल छोड़ा और फिर वापस आकर नाश्ता बनाया। रुचिरा जब नाश्ता करने आई तो उसने बस एक सरसरी नज़र सागर पर डाली और बिना कुछ कहे खाने लगी। सागर को लगा जैसे वह उसके होने या न होने से बिल्कुल बेख़बर है।

शाम को रुचिरा के घर आने से पहले सागर ने डिनर भी तैयार कर दिया था। जब वह दरवाज़े पर थी, सागर ने मुस्कुराते हुए कहा, देखो, आज मैंने तुम्हारे पसंदीदा राजमा-चावल बनाए हैं। रुचिरा ने अंदर आते हुए बस इतना कहा, अच्छा। उसकी आवाज़ में न कोई उत्साह था, न कोई प्रशंसा। सागर को लगा जैसे उसने कोई बड़ी बात नहीं की।

रात में जब रुचिरा फ़ोन पर अपनी दोस्त से बात कर रही थी, तो सागर ने सुना उसे कहते हुए, ÷हाँ यार, आजकल वो घर पर ही है, तो कम से कम खाना तो अच्छा मिल रहा है।÷ सागर का दिल जैसे बैठ गया। उसे लगा उसकी मेहनत, उसका त्याग, सब कुछ बस एक अच्छा खाना बनाने तक सिमट कर रह गया है।

अगले कुछ दिन ऐसे ही गुज़रे। रुचिरा का व्यवहार लगातार बदलता जा रहा था। वह सागर से पहले की तरह खुलकर बात नहीं करती थी, न ही उसके कामों की कोई सराहना करती थी। बच्चे की स्कूल मीटिंग में भी रुचिरा ने अकेले जाने का फ़ैसला किया, यह कहते हुए कि तुम्हारा वहाँ क्या काम? सागर को महसूस होने लगा था कि होममेकर बनने का उसका फ़ैसला, जिसे उसने अपने परिवार के लिए लिया था, अब उसे ही अंदर से खोखला कर रहा है।

एक शाम, सागर बालकनी में बैठा था। शर्मा जी फिर मिले और पूछा, कैसा चल रहा है सागर जी, होममेकर का जीवन?

सागर ने एक गहरी साँस ली और कहा, शर्मा जी, आपने ठीक कहा था। ये आसान नहीं है। सबसे मुश्किल है वह सम्मान खो देना, जो एक कामकाजी पुरुष को मिलता है। ऐसा लगता है, जैसे मेरा वजूद अब बस घर के कामों तक सीमित हो गया है।

शर्मा जी ने हमदर्दी से उसकी पीठ थपथपाई। सागर जी, ये सिर्फ़ आपके साथ नहीं है। समाज ने कुछ भूमिकाएँ तय कर रखी हैं। जब हम उनसे हटते हैं, तो कभी-कभी ऐसा होता है। लेकिन याद रखिए, आपकी ख़ुशी सबसे ज़रूरी है।

उस रात, सागर ने बहुत सोचा। उसे याद आया बॉस हरीश जी की बात, तुम एक महीने छुट्टी पर रहकर तुम देखो, अगर वापस लौटना चाहो तो मुझे सूचित कर देना। सागर ने मन ही मन फ़ैसला कर लिया था।

अगले दिन सुबह, रुचिरा के ऑफ़िस जाने से पहले, सागर ने उससे कहा, रुचिरा, मुझे तुमसे कुछ बात करनी है।

रुचिरा ने घड़ी देखी,जल्दी बोलो, मैं लेट हो रही हूँ।

मैंने फ़ैसला किया है कि मैं वापस नौकरी पर जाऊँगा, सागर ने दृढ़ता से कहा।

रुचिरा चौंक गई। उसके चेहरे पर पहली बार कोई भाव आया - चिंता और आश्चर्य का मिश्रण। पर क्यों? सब ठीक तो है।

नहीं, सब ठीक नहीं है, सागर ने शांति से कहा। मुझे लगता है कि हम दोनों को अपनी भूमिकाओं पर फिर से विचार करना होगा। मैं तुम्हारे और बच्चे के लिए घर पर रहने को तैयार था, लेकिन मैंने महसूस किया कि इससे हमारे रिश्ते में कहीं न कहीं दूरी आ गई है।

रुचिरा कुछ देर चुपचाप खड़ी रही। फिर उसने धीरे से कहा, शायद तुम सही कह रहे हो।

सागर ने अपने बॉस हरीश जी को फ़ोन किया और बताया कि वह वापस आना चाहता है। हरीश जी ने ख़ुशी-ख़ुशी उसका स्वागत किया। एक महीने की छुट्टी, एक होममेकर के रूप में बिताया गया समय, और समाज के तानों ने सागर को बहुत कुछ सिखा दिया था। उसने समझ लिया था कि सम्मान और आत्म-मूल्य किसी पद से नहीं, बल्कि अपनी पहचान और आत्मविश्वास से आता है। वह जानता था कि अब उसे और रुचिरा को अपने रिश्ते को फिर से समझने की ज़रूरत होगी, और शायद यह अनुभव उनके रिश्ते को और भी मज़बूत बनाएगा।

लोक कला, कला और अनंत लोक की यात्रा

कला
पंकज तिवारी
कला समीक्षक

वे गइया के गोबरा लियाउब,
अंगन लिपवाउब हो।
ओंहपा चउक पुरवाउब,
त कुसन के असना लगाउब हो।
हे रामा देवता मनाउब हो।।

चौक पुरना के जैसे पता नहीं और कितने ही लोकपर्व हैं जिसके इतिहास, भुगोल का कोई ओर-छोर ही नहीं है पर इतना तो अवश्य है कि ये सभी हमारे रहन-सहन और व्यवहार में हमेशा से रहे हैं। धरा, धरा पर पलने वाले कण और कणों से निर्मित आकारों का आपसी तालमेल तो हमेशा से ही रहा है और यही सब चीजें धीरे-धीरे लोक में व्याप्त होती गई होंगी। लोक कला के बारे में कुछ भी कहने से पहले इतना तो अवश्य कहना है कि इसके समय और आगे-पीछे के बारे में बहुत ज्यादा जानकारी किसी को भी नहीं है। हाँ इतना अवश्य है जो चीजें आसान होती हैं, उसका प्रयोग ज्यादा होता है, उसकी उम्र बहुत ही अधिक होती है और ये सारी चीजें लिखित में चाहे जब आई रही होंगी पर जीवन में हमेशा से रही हैं। लोक पर्वों में हमारे आसपास की वस्तुओं का भी महत्व बढ़ जाता है मसलन, गाय का गोबर, कुश, आम की टेरी, आदि। सभी को महत्व और सम्मानजनक स्थान के साथ देखा जाता है।

वेदों में भी..

अरं कृण्वन्तु वेदिं समग्निमिन्धतां पुर॰।

तत्रामृतस्य चेतनं यज्ञं ते तनवावहै।। (ऋ 01/170/04)

हे ऋत्विजो! तुम वेदी को धारण करो, उत्तम रीति से उसका निर्माण करो, अलंकृत करो एवं हमारे सामने अग्नि को प्रज्वलित करो, जलाओ। वहाँ अमरणधर्मा नित्य जीव को ज्ञान कराने वाले..(ऋ01/170/04)। वेदी, साज-सज्जा, अलंकरण का जिक्र तो कब से मिलता आया है, चौक जैसा कुछ यहाँ भी तो रहा ही होगा। वेदी के सजावट, अलंकरण, के पृष्ठभूमि को ध्यान से देखा जाए तो लोक के लक्षण वहाँ भी हैं।

अपने देश में कला की बात सृष्टि के सृजन के समय या पूर्व यानि कि सृष्टि सृजन की जब भूमिका बन रही होगी तब से ही है। मनुष्य ही नहीं प्रकृति में जो स्वयं से ही कभी-कभी कुछ सृजित हो जाता है कला तो वहाँ भी है। बादलों का पल-पल पर रंग बदलना, भास्कर की वजह से वसुंधरा पर पड़ रहे वृक्षों के छाया में समय के साथ परिवर्तन और आकृतियों का बदलना, समय के साथ, मौसम के साथ धरा के रूप और श्रृंगार में परिवर्तन मतलब उजाड़ से हरे-भरे, पीले-लाल फूलों से लद जाने और मनमोहन दृश्य का साक्षात होना, क्या है आखिर? रंग-बिरंगी, धानी-परिधानी माहौल उत्सव की भांति नजर आता है और किसी भी उत्सव की कल्पना बिना कला मुमकिन नहीं है।

अभीवृतं कृशनैर्विश्वरूपं हिरण्यशम्यं यजतो बृहन्तम्।

आस्थाद्रथं सविता चित्रभानु॰ कृष्णा रजांसि तविषिं दधान॰।। (ऋ 01/35/04)

यज्ञ के योग्य सविता एवं लोक में व्याप्त अंधकार को दूर करने वाली तेज किरणों का स्वर्ण सम बखान, सूर्य और पूरे वातावरण का बखान, प्रस्तुतिकरण प्राकृतिक सौंदर्य और कला के मर्म का बाकायदा में किया गया प्रदर्शन है। बहुत समय पहले जब रहन-सहन जंगलों में रहा होगा, गुहा या गुफा में रहा होगा, दीवारों पर आंड़ी-तिरक्षी रेखाओं के रूप में ही सही पर कला तो रही ही होगी। अभी के खोजों में जिस भी समय का जिक्र हो रहा है उससे भी बहुत-बहुत पहले का अगर अनुमान लगाया जाय तो पता नहीं कितनी-कितनी सभ्यताओं की बात आंखों के सामने तैर जाती है और सभी सभ्यताओं के साथ कदम मिला कर चली है कला। क्या आज बिना कला जीवन सम्भव है? नहीं है। तो कैसे संभव है कि उस समय के लोग बिना कला के जीवित रह सकते रहे होंगे?

मनुष्यों के खून में बसी है कला। जैसे खाने-पीने और पहनने हेतु भोजन सहित अन्य वस्तुओं की जरूरत होती है वैसे ही कला की भी जरूरत है और हमेशा रही है। बिना इसके जिंदगी में अंजोर नहीं बल्कि अंधेरा है। ध्यान लगाकर देखा जाए तो स्पष्ट हो जाएगा कि पहले अक्षर या शब्द नहीं बल्कि लकीर खींचने के प्रयास में एक बच्चा पत्थर, लकड़ी या कलम-दवात उठाता है। ये

तो सिद्ध है कि पहले अक्षर नहीं बल्कि लकीर वजूद में आई होगी और यदि अक्षर भी वजूद में पहले रहा होगा तो वहाँ भी कला ही है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश जैसे जगहों से बहुत पहले से ही गुहा चित्रों के प्रमाण मिलने लगे थे। लिखुनिया दरी तो इसका सबसे बड़ा प्रमाण है। वैदिक युग या और भी पहले के समय को समझें तो पाएंगे कि अब तक आखेट और लड़ाई झगड़ों के चित्रों से इतर बात मन के सुकून और आनंद तक पहुँच गई थी जो इसके पहले भी कई बार रही होगी पर उसका ज्ञान हमें आपको नहीं रहा होगा। हम आप किसी चीज की थाह नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं इसका मतलब उस चीज के अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह लगा देना तो जायज नहीं होगा। हमारी नजर हर अथाह को थाह सके जरूरी तो नहीं है। चित्र जो दीवारों और धरती पर बनने तक पहुँच गये थे, जो आगे चलकर पूजा-प्रतिज्ञा तक पहुँच गये थे। जहाँ शुरू में देवी-देवता और यक्ष के चित्र, मूर्ति मूर्तन न होकर संकेतों में होते रहे थे, जहाँ वृत्त, त्रिकोण, चतुर्भुज जैसे लकीरों से पूजा-पाठ, परिक्रमा के काम आगे बढ़ाए जाते रहे हैं। लकीरों को खींचने हेतु गेरू, कोयला, खड़िया, जैसे और भी सामानों का प्रयोग हुआ है। रंगों हेतु आसानी से मिल जाने वाले चीजों के प्रयोग होते रहे थे। जिसमें रंग-रंग के दाने, हल्दी, कुंकुम, फूल-पत्ती, रंग-रंग के मिट्टियों का भी प्रयोग होता रहा था। ज्यामिति आकारों का प्रयोग अलग-अलग अर्थों के हिसाब से, अनुष्ठानों के हिसाब से उनके प्रयोगों पर जोर दिया जाता था ताकि पैसों के विशेष खर्च के बिना भी रीति रिवाजों को निभाया जा सके। तब घर दुआर सजाने हेतु, उत्सव, त्योहार मनाने हेतु कैनवास और पेपर की जरूरत नहीं होती थी बल्कि जमीन और दीवार ही काफी थी। रंग-रोगन से अपना घरे-दुआर, गाय-गोरू के सींगों, गोरुआरों आदि को रंगने परंपरा बनी रहीऽ।

शुरू-शुरू में जिसकी शुरुआत बस सुंदरता बढ़ाने के लिए रही वो समय के साथ लोगों हेतु उनके जिंदगी का जरूरी हिस्सा बन गई और आगे चलकर परिवार संस्कार और त्योहार में बदल गई जिसका विकास पुस्त-दर-पुस्त, पीढ़ी-दर-पीढ़ी होती चली गई और पुरुष या महिला दोनों के साथ अपने अस्तित्व को बचाते हुए जुड़ गई। किसी भी शादी-ब्याह, तीज-त्योहार, पूजा-पाठ आदि में कुछ न कुछ चित्र बनाना जरूरी सा हो गया जहाँ अधिकांश महिलाएं घर के साज-सज्जा और चित्रकारी का जिम्मा अपने सिर उठा लीं और गजब की बात ये रही कि उन्हें आभास तक भी नहीं था कि कितनी बड़ी जिम्मेदारी के साथ वो आगे बढ़ रही थीं, अपने कला और संस्कृति को बचाते हुए आगे बढ़ रही थीं और उन्होंने कभी खुद को कलाकार भी नहीं माना।

यही साज-सज्जा आगे चलकर लोक कला के रूप में अपना स्थान बनाया। लोक शब्द को दो अर्थों में देखा जा सकता है पहला समाज और दूसरा जन साधारण या जन समुदाय से हैं। इनके सब के हाथों टेढ़ी भेड़ी किंतु भाव से भरे चित्रों को भी लोक कला कहा जाता है। लोक कला में रीति-रिवाज, परंपरा आदि को बचा के रखने की शक्ति है।

आम जन के मन से जुड़े रहने खातिर, बिना लिखे रूप में, बिना किसी तैयारी या साक्ष्य के, ये पूरे समृद्ध अवस्था में अगली पीढ़ी तक आसानी से पहुँच जाती हैं और अपने मूल रूप से पहुँच जाती हैं इसका बड़ा कारण, बड़ी विशेषता कलाकारों का अनाम रहना है। इस कला में थोड़ा- थोड़ा करके कई लोग कार्य करते थे। ध्यान से देखा जाए तो शास्त्रीय कला हेतु कला की और भी जानकारी होनी जरूरी होती है जबकि लोककला इन सभी से परे की चीज है। लोक कला सभी रिश्तों के साथ घुल-मिल कर अपने रूप में सभी के बीच रहते हुए हमेशा से यात्रा में रही है। कलाकृतियों के सुंदर-असुंदर जैसी बातें यहाँ नहीं होती है। **कलाकृति पंकज तिवारी की है।**

दोस्तों की खुशी में हमारी खुशी

मित्रता दिवस पर विशेष
एकता कानूनगो बक्षी
लेखक पत्रकार हैं ।

मनुष्य जीवन में दोस्ती का रिश्ता बड़ा प्यारा रिश्ता होता है। दोस्त होते ही कुछ ऐसे हैं जिनके साथ बिताए चंद लम्हें हमे तरोताज़ा कर देते हैं। कई बार तो सुख और दुख के क्षणों में उनकी मौन उपस्थिति भी बहुत प्रभावी हो जाती है। उनका होना ही हमें बहुत हिम्मत दे देता है।

अच्छे मित्रों का जीवन में होना हमारी अनमोल निधि होती है। जैसे मोती मिल गए हों किसी खजाने से। यह रिश्ता दिल से दिल के तार को जोड़ता है। आपसी समझ की मिसाल कायम करता है। एक ओर जहां इसमें दूसरे की संवेदनाओं से गुजरकर निस्वार्थ समर्पण भाव की खुशबू होती है वहीं एक दूसरे को सम्बल देकर जीवन को सहज और खूबसूरत बनाने के बेहतरीन रंग भी खिले होते हैं।

यदि 'दोस्ती' के संदर्भ में थोड़ा व्यापकता से विचार करें तो बड़े दिलचस्प तथ्य निकल आते हैं। दोस्त हमउम्र भी हो सकते हैं और उम्रदराज भी। हम से उम्र में बहुत छोटे भी हो सकते हैं, यहां तक कि पेड़ पौधे भी हमारे दोस्त हो सकते हैं तो पशु पक्षी भी।

निर्जीव वस्तुओं से भी हमारी पक्की दोस्ती बन जाती है। किताबों को तो इंसान की सच्ची दोस्त होंने का गौरव पहले से हासिल हो चुका है।बचपन में हमारे खिलौने हमारे दोस्त ही तो थे और बाद में हमारी पहली गाड़ी या हमारी कोई खास चीज़ उस से हमारा लगाव जो उन बेजान वस्तुओं में भी जान फूक देता है, वह भी दोस्ती का ही एक खास रूप है। इस धरती के सभी जीवों का प्रकृति से भी एक तरह से दोस्ती का ही रिश्ता होता है।

जीवन की सुंदरता में मित्रता के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। माँ बेटे, पिता पुत्री या पालक संतान, सास बहू,भाई बहन,पति पत्नी आदि जैसे पारंपरिक आत्मीय रिश्तों के भीतर जब दोस्ती की सुहावनी हवा बहने लगती है तो यह और अधिक खूबसूरत और हर कसौटी पर खरा उतरने में सक्षम हो उठता है। दोस्तों का साथ हो तो सारी उलझने मानो हँसते मुस्कुराते हुए ही मिट जाती है। समय मानो पंखों पर उड़ान भरता हुआ गुजरता जाता है।

एक और अनूठी दोस्ती होती है जो हमेशा हमारे साथ बनी रहती है। वह है हमारी खुद से खुद की दोस्ती। यह वह महत्वपूर्ण रिश्ता है जो निर्धारित करता है कि जीवन मे हमारे अन्य रिश्ते और दोस्तियां सहज रहेंगी या नहीं।

हमारे भीतर छुपे हुए दोस्त हमे मजबूत बनाते हैं। बाहरी दुनिया मे कदम रखने से पहले ही सारा होमवर्क कराते रहते हैं।

ये हमें बहुत करीब से जानते,समझते हैं। हमारे दुखी होने से पहले ही इन्हे पता चल जाता है कि उदासी के बादल छाने लगे हैं। खुशियों का इंद्रधनुष खिलाने की युक्ति भी इन्हे ही पता होती है। दूसरों से अनावश्यक उम्मीद लगाकर हताश होने की बजाए हमे अपने भीतर के दोस्त से हर दिन खुलकर बात करनी चाहिए। उसके हाल चाल पूछते रहना चाहिए। अपनी परेशानियों को दूसरो से साझा करने से पहले भीतर बैठे हमारे मित्र से उसका परीक्षण करवाना चाहिए। इसके लिए हम डायरी लेखन का उपयोग भी कर सकते हैं। ऐसा करते समय हम खुद को बाहरी व्यक्ति समझ सकते हैं। चिंतन, मनन करने से हम अपने स्तर पर ही काफी परेशानियों का हल निकाल पाने में सफल हो सकते हैं। हमारे मन मस्तिष्क में पहले से ही अधिकांश परेशानियों से जुड़े हर दस्तावेज और उपाय मौजूद होते हैं। सच तो यह है कि हमारी कई गुत्थियों व समस्याओं की चाबी भी हमारे भीतर ही मौजूद होती है।

खुद को खुश और स्वस्थ रखने की सब से पहली ज़िम्मेदारी हमारी स्वयं की ही होती है। उसके लिए खुद को ठीक तरह से समझकर खुशियों के अवसर जुटाना,खुद को ऐसी गतिविधियों से जोड़ना जिस से हम स्वस्थ और प्रसन्न बने रहें, यह बाहरी नहीं, हमारे भीतर के प्रबंधन पर ही खासा निर्भर करता है। गौर करें तो हम पाएंगे जब हम व्यस्तताओं के चलते खुद को एकांत समय नही दे पाते, विचार नही कर पा रहे होते हैं तब अक्सर हम खुद को असंतुलित,व्याकुल व दिशाहीन महसूस करने लगते हैं। जैसे लंबे समय तक व्यायाम न करने से शरीर थका और बीमार पड़ जाता है बस उसी तरह मनन चिंतन अपनी भीतरी व्यवस्था और भीतर के दोस्त का ध्यान न रखने पर मानसिक और शारीरिक दोनो ही कष्टों को झेलना पड़ जाता है।

कह सकते हैं कि सब से जरूरी व पक्की दोस्ती हमारी खुद से खुद की होती है। खुद को स्वीकारना, जीवन मे अच्छे बदलाव लाने के लिए खुद की मदद करना,सकारात्मक ऊर्जा देकर खुद को स्वस्थ रखना, खुद को उपहार देना, रोमांचक अनुभव से खुद को चकित कर देना यह सब कुछ हमें निरंतर करते रहना चाहिए इससे हमारे भीतर मौजूद सबसे गहरे दोस्त 'मन मस्तिष्क' को खुश और प्रसन्न रखा जा सकता है। दोस्तों की खुशी में ही अपनी खुशी निहित होती है।

दोस्ती एक पवित्र अनुभूति

मित्रता दिवस विशेष
भावेश कानूनगो

दोस्ती – यह शब्द जितना सहज प्रतीत होता है, उतना ही भावपूर्ण, गहन और जीवन को परिवर्तित करने वाला होता है।

यह संबंध रक्त से नहीं, आत्मा से जुड़ा होता है – जहाँ न जात-पात का भेद होता है, न पद और प्रतिष्ठा की दीवारें।

यह केवल मन और भावनाओं का निष्कलंक संगम है। आज जब जीवन तकनीक के सहारे तेज़ी से आगे बढ़ रहा है, संबंधों की गरिमा कहीं खोती जा रही है। सोशल मीडिया पर हजारों ÷फ्रेंड्स÷ होने के बावजूद, भीतर एक सच्चे साथी की रिक्तता खलने लगी है। अब दोस्ती 'हैशटैग' और ÷स्माइलीज़÷ तक सिमटती जा रही है। भावनाओं को समझना, समय देना और विपत्ति में साथ खड़ा होना – यह सब धीरे-धीरे ओझल होता जा रहा है।

श्रीकृष्ण ने अपने जीवन में मित्रता को चरम आदर्श रूप में प्रस्तुत किया। सुदामा संग उनका संबंध इस बात का प्रमाण है कि सच्चा मित्र कभी भुलाया नहीं जाता, चाहे कोई कितनी भी ऊँचाई क्यों न छू ले। दुर्भाग्यवश, आज की कई मित्रताएँ स्वार्थ से दूषित हो चुकी हैं – लाभ तक साथ और लाभ जाते ही दूरी। फिर भी यह कहना अनुचित न होगा कि आज भी कुछ निःस्वार्थ मित्रताएँ समाज में जीवित हैं, जो प्रेरणास्त्रोत बनती हैं।

श्रीकृष्ण और द्रौपदी की मित्रता इसका अप्रतिम उदाहरण है।

जब चीरहरण का संकट उपस्थित हुआ, तब श्रीकृष्ण ने द्रौपदी की लाज बचाई। ऋषि दुर्वासा के आगमन पर जब वह असहाय थीं, तब भी कृष्ण ही सहायता हेतु उपस्थित हुए।कुरुक्षेत्र में जब अर्जुन मोहग्रस्त थे, तब उन्होंने गीता का उपदेश देकर धर्म, कर्तव्य और आत्मज्ञान का मार्ग दिखाया।सच्चा मित्र वही होता है – जो संकट में साथ दे, मनोबल बढ़ाए और दिशा दिखाए।

आज के युग में अनेक मित्र ऐसे भी हैं, जो भ्रमित कर गलत राह पर ले जाते हैं। ऐसे समय में श्रीकृष्ण जैसे सखा की आवश्यकता और भी गहराई से महसूस होती है। जब उद्धव को अपने ज्ञान का गर्व हुआ, तब श्रीकृष्ण ने उन्हें ब्रज की गोपियों के पास भेजा।

गोपियों की भक्ति, विरह और निष्कलंक प्रेम ने उद्धव को नम्रता का पाठ पढ़ाया। यह उस आध्यात्मिक मित्रता का उदाहरण है जहाँ प्रेम, ज्ञान से भी श्रेष्ठ ठहरता है।

श्रीराम ने भी मित्रता को कर्म और आचरण से परिभाषित किया।

उन्होंने कहा – जो व्यक्ति अपने मित्र के दुःख में दुःखी नहीं होता, उसका दर्शन भी पाप के समान है। राम ने सिखाया –अपने पर्वत जैसे दुःख को धूल समान समझो, और मित्र के धूल जैसे दुःख को पर्वत मानो।

सनातन संस्कृति में मित्रता केवल सामाजिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक बंधन मानी गई है। भक्ति के नौ रूपों में सख्य-भक्ति वह अवस्था है, जहाँ भक्त ईश्वर को मित्र मानकर अपनत्व से पूजता है। यहाँ औपचारिकता नहीं, केवल स्नेह और विश्वास होता है। श्रीकृष्ण और गोपों की पारस्परिकता इसका अनुपम उदाहरण है – जहाँ ईश्वर भी मित्र बनकर हँसते, खेलते और अपनत्व से जीवन जीते हैं।

आज के व्यस्त और औपचारिक संबंधों के दौर में, मित्रता एक दिवस और सोशल मीडिया की बधाइयों तक सिमट गई है।

ऐसे में इसकी पवित्र अनुभूति धूमिल होती जा रही है। हालाँकि आदर्श मित्रता आज दुर्लभ हो सकती है, फिर भी यदि हम श्रीकृष्ण का दृष्टिकोण अपनाएं –तो बिना दिखावे और स्वार्थ के भी सच्ची मित्रता निभाई जा सकती है। जहाँ कोई गिरता दिखाई दे, वहाँ उसे थामें। जहाँ अंधकार हो, वहाँ दीपक बनकर राह दिखाएँ। यही है सच्ची मित्रता की सार्थकता। मित्रता कोई औपचारिक बंधन नहीं, वह एक मौन संवाद है – जो आँखों में विश्वास बनकर झलकता है, और हृदय में अपनत्व बनकर बसता है। जब चारों ओर दिखावा, स्वार्थ और आभासी संपर्कों की भीड़ हो,तब सच्ची मित्रता एक तपस्या बन जाती है – जिसे निभाना सभी के वश की बात नहीं। पर यदि हम श्रीकृष्ण जैसे सखा को अपना आदर्श बनाएं, तो न केवल किसी के जीवन में उजाला कर सकते हैं, बल्कि मित्रता को उसकी वास्तविक गरिमा भी लौटा सकते हैं।

आइए, इस मित्रता दिवस पर हम यह संकल्प लें –

कि हम केवल नाम के नहीं, बल्कि समय पर साथ निभाने वाले, वचन निभाने वाले, और मौन में भी समझने वाले सच्चे मित्र बनें।

क्योंकि दोस्ती तब ही सार्थक होती है – जब वह दिखावे से नहीं, दिल से निभाई जाती है।

क्यूँकि सास भी कभी ...की वापसी के निहितार्थ

टीवी की दुनिया
आदित्य दुबे,
लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

हिंदी एकता कपूर का मेगा फैमिली सीरियल- 'क्यूँकि सास भी कभी बहू थी ...' अपने समय का बेहद लोकप्रिय टीवी सीरियल था। इस सीरियल में रिश्तों की संवेदनशीलता ,पारिवारिक सम्बन्धों की उलझन-सुलझन और एक फैमिली मेलोड्रामा के सारे फार्मूले थे । अभिनय में स्मृति ईरानी और अनुराग उपाध्याय द्वारा अभिनीत तुलसी और

मिहिर की जोड़ी थी जो टीवी दर्शकों को अच्छी लगती थी ।और भी लम्बी स्टार कास्ट थी जिसमें करण (हितेन तेजवानी) और नंदनी (गौरी प्रधान) हमेशा से दर्शकों के पसंदीदा रहे थे । इसे अपने समय का -'आइकेनिक' सीरियल कहा जाता था। पिछले सप्ताह इस टीवी सीरियल का स्टार प्लस चैनल? पर नये कलेवर में प्रसारण आरम्भ हुआ ।

क्या यह सीरियल का पार्ट टू होगा या फिर फर्स्ट से लास्ट तक के सभी एपीसोड का पुनर्प्रसारण होगा ? यह सवाल दर्शकों के मन में ज़रुर था मगर जब यह स्पष्टीकरण सामने आया कि इस सीरियल में अब नई पीढ़ी विरासत सम्भालेगी और दूसरे सीजन में पुराने चेहरों के साथ-साथ नए एक्टर्स भी शामिल होंगे,तब यह बात साफ हो गई कि सीरियल की कहानी आगे बढ़ेगी । रोहित सुचांती, तनीषा मेहता, शगुन शर्मा और अमन गाँधी जैसे नये कलाकार तुलसी और मिहिर की विरासत को आगे बढ़ाते हुए तुलसी और मिहिर की कहानी में नयापन लाएंगे । ऐसे में यह सवाल स्वाभाविक होगा कि क्या ये नई पीढ़ी पुराने शो के तिलस्म को बरकरार रखते हुए नए दर्शकों को अपनी ओर खींच पायेगी ?

पहले सीजन में इस टीवी सीरियल ने लोकप्रियता का एक इतिहास रचा था । शो स्टार प्लस पर रात 10.30 बजे के टाइम स्लॉट में आता था और इसने उस समय टीआरपी के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए थे । तुलसी विरानी हर घर का हिस्सा बन गई थीं और ये शो भारतीय टेलीविजन के इतिहास का एक मील का पत्थर बन गया था। इसे भारतीय टेलीविजन के सबसे सफल शो में गिना जाता था, जिसने पारिवारिक टीवी ड्रामा संवर्ग में एक नई पहचान बनाई थी । टीवी सीरियल के यह दो चरित्र तुलसी विरानी और मिहिर विरानी, ये वो नाम हैं जिन्होंने कई सालों तक छोटे पर्दे के दर्शको के दिल पर राज किया । अब एक बार फिर वही पसन्दीदा एक्ट्रेस स्मृति ईरानी 'तुलसी' के किरदार में वापस आ रही हैं, वहीं एक्टर अमर उपाध्याय एक बार फिर 'मिहिर' के लुक में नजर आएंगे. ये दोनों सितारे अपनी केमिस्ट्री से एक बार फिर दर्शकों का दिल जीतने की तैयारी कर रहे हैं. उनकी वापसी की खबर ने फैंस के बीच जबरदस्त उत्साह भर दिया है, क्योंकि यह उनके लिए ये एक शो नहीं, बल्कि एक इमोशन है ।

इस आइकॉनिक टीवी सीरियल के इस संस्करण के प्रसारण के निहितार्थ की यदि हम बात करें तो इन दिनों प्रसारित होने वाले किसी भी फैमिली बेस्ड स्टोरी वाले टीवी सीरियल का समुचित रुप से लोकप्रिय न होना वो सबसे बड़ा कारण है जिससे इस सीरियल को थोड़े बदलाव के साथ सामने लाना पड़ा । इस सीजन दो में लगभग एक सौ पचास एपीसोड की एक परिमित (फाइनाइट) सिरीज़ बनेगी । किसी भी फिल्म या टीवी शो को जब

दोहराया जाता है तो आमतौर पर यह माना जाता है कि उसकी पुरानी लोकप्रियता को दोबारा भुनाया

जायेगा मगर ऐसा हर बार नहीं होता है ।यही जोखिम इस सीरियल के साथ भी है । असल में

नई पीढ़ी के लिये मनोरंजन का फण्डा कुछ अलग

होता है ।अब यह तो? वक्त ही बताएगा कि नई पीढ़ी का इस सीरियल के प्रति रुख क्या रहता है ?

इस सीरियल के दोबारा प्रसारण के बाद कई

दर्शकों ने इसकी सराहना की और पहले एपीसोड को देखते हुए फोटो, वीडियो भी शेयर किये ।एक दर्शक ने तो सीरियल देखते हुए अपने परिवार की तस्वीर साझा की और लिखा, 'इतने साल बाद भी स्मृति ईरानी तुलसी के रूप में आइकॉनिक हैं।' एक अन्य दर्शक ने भी सीरियल की स्टार कास्ट की तारीफ की। वह लिखता है, 'वाह, पुरानी यादें ताजा हो रही हैं। बचपन में मैं अपनी दादी और मां के साथ इस सीरियल को देखा करता था।स्मृति ईरानी और बाकी कलाकारों को सराहा कुछ यूजर्स ने सीरियल 'क्योंकि सास भी कभी बहू थी' का पहला एपिसोड देखते हुए फोटो, वीडियो शेयर किए हैं। अब यह क्रैज़ कब तक बना रहता है यह देखना रोचक होगा ।

राजेन्द्र शुक्ल : जन्म-दिवस पर विशेष

राजनीति में नैतिकता, जनसेवा और नवाचार के अद्वितीय संयोजक

ताहिर अली
लेखक सेवानिवृत्त संयुक्त संचालक, जनसम्पर्क संचालनालय है

कुछ व्यक्तित्व केवल अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व नहीं करते, वे एक विचार बन जाते हैं। राजनीति, प्रशासन, विकास और जन-भावनाओं के मध्य जब संतुलन की आवश्यकता होती है, तब कुछ ही लोग होते हैं जो इस संतुलन को दृढ़ता, संवेदनशीलता और दूरदृष्टि के साथ निभा पाते हैं। ऐसे ही एक कर्मठ नेता हैं– श्री राजेन्द्र शुक्ल।

रीवा की धरती से राष्ट्रीय दृष्टिकोण तक की यात्रा– उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल का जीवन एक अभ्यास है – उन मूल्यों का जो राजनीति को सत्ता का साधन नहीं, सेवा और संवेदना का पथ बनाते हैं। रीवा की सांस्कृतिक भूमि पर पले-बढ़े शुक्ल जी की संगठन क्षमता और जन-भावना को समझने की उनकी क्षमता ने उन्हें प्रारंभ से ही विशिष्ट बना दिया। आज वे पाँच बार से लगातार विधानसभा सदस्य हैं, यह कोई आकस्मिक राजनीतिक उपलब्धि नहीं, यह जनता द्वारा उस ईमानदार नेतृत्व को बार-बार चुने जाने की स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। विनम्रता, स्पष्टवादिता और संवादशीलता– न कभी बात घुमाते हैं, न टालते हैं

श्री शुक्ल जी का व्यक्तित्व सतही राजनैतिक भाषणों से इतर, गंभीर, परिपक्व और सन्नद्ध विचारशीलता का है। वे जिस आत्मीयता से जन-सामान्य से संवाद करते हैं, वह केवल एक राजनेता की शैली नहीं, बल्कि एक जन-सेवक की सहज प्रवृत्ति है। स्पष्टता उनके व्यक्तित्व की रीढ़ है, चाहे वह किसी प्रशासनिक निर्णय पर हो, या किसी सामाजिक विषय पर; वे न कभी बात घुमाते हैं, न टालते हैं।उनका यह स्वभाव उन्हें लोकप्रियता से परे जाकर विश्वसनीयता प्रदान करता है। कार्यकर्ताओं के लिए वे 'राजेन्द्र भैया' हैं और अफसरों के लिए एक 'न्यायप्रिय, अनुशासित और विचारवान मार्गदर्शक'। यह दुर्लभ संतुलन उन्हें मध्यप्रदेश के प्रशासनिक ढाँचे का एक आधार स्तंभ बनाता है।

राजनीतिक जीवन के प्रारंभिक वर्षों से ही उन्होंने संगठनात्मक अनुशासन, विचारधारात्मक प्रतिबद्धता और विकासोन्मुख सोच के साथ सार्वजनिक कार्यों में सक्रिय भागीदारी निभाई। जन-सेवक के रूप में उन्होंने शासन की विभिन्न जिम्मेदारियाँ संभालते हुए आवास, पर्यावरण, वन, जैव-विविधता, ऊर्जा, खनिज, उद्योग, जनसम्पर्क, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी जैसे जटिल विभागों का नेतृत्व न केवल जिम्मेदारी से किया, बल्कि प्रत्येक क्षेत्र में दीर्घकालिक नीतिगत परिवर्तन लाने का कार्य किया। ऊर्जा विभाग में कार्य करते हुए उन्होंने राज्य को 24 घंटे बिजली देने के सपने को अटल ज्योति योजना के माध्यम से यथार्थ में बदल दिया। उनका विश्वास था कि सशक्त ऊर्जा व्यवस्था के बिना औद्योगिक विकास और ग्रामीण सशक्तिकरण अधूरा है। नवकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में रीवा का ऐशिया का सबसे बड़ा सोलर पॉवर प्लांट विकास और पर्यावरण संतुलन की अद्वितीय मिसाल है।

स्थानीय भावनाओं के साथ विकास की एकात्मता– उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने यह भली-भांति समझा कि विकास का अर्थ केवल भौतिक नहीं है, बल्कि जन-भावनाओं, परंपराओं और सांस्कृतिक प्रतीकों के साथ उसका समन्वय भी जरूरी है। यही कारण रहा कि उन्होंने स्थानीय गौरव सफेद बाघ को उसके प्राकृतिक आवास में पुनः लाकर लोगों की भावनाओं का सम्मान किया। यह निर्णय मात्र वन्य संरक्षण का नहीं, बल्कि उस सांस्कृतिक अस्मिता का था, जिसे जनता दशकों से जीवंत देखना चाहती थी।पर्यावरण संरक्षण उनके चिंतन का स्थायी हिस्सा रहा है।गौ-संरक्षण, तालाबों के पुनर्जीवन, बड़े पुलों और सड़कों के निर्माण, मंदिरों एवं तीर्थ-स्थलों के संरक्षण और रिंग रोड जैसी परियोजनाओं के माध्यम से उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि विकास केवल आँकड़ों में नहीं, बल्कि आम जन-जीवन के अनुभवों में परिलक्षित हो। जन-स्वास्थ्य, सिंचाई, सड़क, शिक्षा, एयरपोर्ट, हवाई सेवाओं का विस्तार और शहरी अधोसंरचना जैसे विषयों पर उनकी सोच स्थायित्व और समावेशिता पर केन्द्रित रही। उन्होंने पेयजल योजनाओं, सिंचाई विस्तार, स्वास्थ्य संस्थानों की गुणवत्ता में सुधार और चिकित्सकों की नियुक्ति जैसे कार्यों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी।

श्री शुक्ल का विश्वास रहा है कि शासन केवल निर्देश देने का माध्यम नहीं, बल्कि जन-सामान्य की भागीदारी से संचालित सामाजिक अनुबंध है। उन्होंने खाली पड़ी शासकीय भूमि को हरित बगीचों और उद्यानों में बदलकर शहरी सौंदर्य में वृद्धि की। युवाओं के लिए खेल अधोसंरचना तैयार कर उन्हें स्वाभिमान और राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा। गौ-सेवा के प्रति उनका समर्पण उनके संवेदनशील नेतृत्व की झलक देता है। उन्होंने गौ-सेवा को आर्थिक रूप से व्यवहार्य एवं सामाजिक रूप से समावेशी बनाकर एक मॉडल प्रस्तुत किया। गौ-अभयारण्य और गौ-प्रबंधन के नवाचारों के माध्यम से उन्होंने ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था में एक स्थायी आय स्रोत की कल्पना साकार की।

शिक्षा और संस्कृति के प्रति दीर्घदृष्टि– उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल के चिंतन का महत्वपूर्ण स्तम्भ शिक्षा रहा है। संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना, नवीन महाविद्यालयों की संरचना और छात्रावासों के निर्माण में उन्होंने निरंतर नेतृत्व प्रदान किया। संस्कृति के संरक्षण को

उन्होंने केवल आयोजनों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे शिक्षा, अधोसंरचना और नेतृत्व विकास का आधार बनाया।

विकास के प्रति उनकी सोच, गहराई और समरसता– उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल विकास को मात्र योजनाओं की श्रृंखला नहीं मानते। उनके लिए यह एक बहु-आयामी प्रक्रिया है, जो शासन की संवेदनशीलता, समाज की भागीदारी, और भविष्य की परिकल्पना के साथ मिलकर पूर्ण होती है।उनके भाषणों और संवादों में अक्सर यह बात उभर कर आती है कि हर योजना को बनाने से पहले उसके अंतिम लाभार्थी की आवश्यकता, सामर्थ्य और परिस्थिति को समझना चाहिए। यही सोच उन्हें योजनाओं के मूल्यांकन, संशोधन और समावेशी पुनर्रचना की ओर प्रेरित करती है।

संघर्षशीलता और संवादशीलता– नेतृत्व की दो धाराएँ– श्री शुक्ल का राजनीतिक जीवन वैचारिक स्पष्टता और व्यक्तिगत ईमानदारी का समन्वय है। उन्होंने कभी भी संघर्ष से कतराने की प्रवृत्ति नहीं अपनाई, चाहे वह जमीनी मुद्दों को शासन तक पहुँचाना हो या संकट की घड़ी में जनता के बीच खड़े रहना।वहीं दूसरी ओर, वे संवाद के पक्षधर हैं। उन्होंने प्रशासन और जनता के बीच सेतु बनकर भरोसे और पारदर्शिता की संस्कृति को मजबूत किया है।श्री शुक्ल केवल एक जन-प्रतिनिधि नहीं हैं। वे मूल्य-आधारित राजनीति के जीवंत प्रतीक हैं। उनका जीवन इस बात का प्रमाण है कि यदि नेतृत्व ईमानदार, दृष्टि-संपन्न और संवेदनशील हो, तो कोई भी क्षेत्र पिछड़ा नहीं रह सकता, कोई भी समाज दिशाहीन नहीं होता।उनके नेतृत्व में स्थानीय आकांक्षाओं को गति मिली है, क्षेत्र को सांस्कृतिक पुनरुत्थान और सतत विकास की दिशा प्राप्त हुई है।

सोच जो सामान्य से असामान्य की ओर ले जाती है– यदि श्री शुक्ल जी की कार्यशैली को एक शब्द में बांधना हो, तो वह है 'समस्याओं को अवसर में बदलने की दृष्टि'। नीति निर्धारण में भावनाओं और संभावनाओं का समावेश।वे यह मानते हैं कि विकास तब संपूर्ण होगा, जब उसका लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे, चाहे वह किसी जन-जातीय अंचल में हो या किसी शहरी झुग्गी में।श्री शुक्ल मानते हैं कि आज की राजनीति में यदि सबसे बड़ी ज़रूरत किसी चीज़ की है, तो वह है, आत्मावलोकन और उत्तरदायित्व का भाव। उनका मानना है कि नेतृत्व केवल मंच पर भाषण देने का नाम नहीं, अदृश्य श्रम और सुलभ संवाद का निरंतर अभ्यास है। वे युवाओं को सलाह देते हैं– जोश को होश से जोड़िए। विचारशील बनिए, केवल प्रतिक्रियाशील नहीं। अपने भीतर उस नागरिक को खोजिए, जो केवल अधिकार नहीं माँगता, बल्कि कर्तव्यों की भी चिंता करता है। उनकी यह सलाह केवल भाषण का अंश नहीं, उनकी पूरी कार्यशैली की आत्मा है।

राजनीति सिर्फ सत्ता की होड़ नहीं होती, बल्कि यह समाज की दिशा, उम्मीदों का निर्माण और साझा ज़िम्मेदारी का माध्यम होती है। ऐसे नेता कम ही होते हैं जो सत्ता को साधन मान कर, सिद्धांत, सेवा और संवेदना को लक्ष्य मानते हैं। श्री राजेन्द्र शुक्ल ऐसे ही दुर्लभ नेताओं में से एक हैं।श्री शुक्ल का जीवन-दर्शन स्पष्ट है– सत्ता तो क्षणिक होती है, पर सिद्धांत स्थायी। ज्ञान और नैतिकता के बिना कोई समाज सशक्त नहीं रह सकता।मंत्री पद पर रहते हुए वे कभी अकेले निर्णय नहीं लेते। लोकहित, प्रभावशाली क्रियान्वयन एवं प्रशासन का समन्वय उनके निर्णय की मूल आधारशिला हैं।उनकी सबसे बड़ी विशेषता है संवाद के माध्यम से नीति निर्माण।जनता की सुनवाई करते हैं, केवल समस्या नहीं, बल्कि माँग को समझते हैं।अधिकारियों से बातचीत करते हैं, लेकिन उन्हें मानव-सम्मान और दृष्टिकोण से जोड़ते हैं।हर निर्णय को केवल तकनीकी नहीं, बल्कि सामाजिक दृष्टिकोण से देखते हैं।वे नीतियों को केवल कागज़ी दस्तावेज़ नहीं मानते, बल्कि मानवतावादी प्रक्रियाएँ बनाते हैं।उनकी यह प्रक्रिया केवल शासन-पद्धति नहीं, बल्कि एक मानव-केंद्रित दर्शन पेश करती है।

नैतिकता और संयम– राजनीति का संतुलित पथ

आम राजनीतिक हलचलों में जहाँ कटुता, ध्रुवीकरण, स्वार्थ की राजनीति और जोर ज़रूरी हो जाता है, वहाँ श्री शुक्ल जी ने अपनी कर्मठता, सादगी, संयम, सत्यनिष्ठा को अपनाया। उनका मानना है किबहस को संवाद तक सीमित रखिए, विवेकहीन आलोचना की जगह सृजनात्मक सुझाव दीजिए, जनहित को स्वयं से ऊपर रखिए।इस दृष्टिकोण ने उन्हें एक ऐसी स्थिति दी, जहाँ राजनीति धर्म, नैतिकता, और लोक-संगठन का अंग बन गई।

राजनेता के साथ-साथ एक व्यक्तिगत जीवन भी होता है, जिसे श्री शुक्ल ने सादगी, प्रेम और नैतिकता से निभाया।परिवार में वे शांत, विचारशील और समय देने वाले सदस्य हैं।मित्रों में वे भरोसेमंद, संघर्षशील और सकारात्मक्ता से परिपूर्ण हैं।श्री शुक्ल सहकर्मियों और ऑफिस स्टॉफ के प्रति सदैव संवेदनशील रहते हैं।अपने व्यवहार में वे सरल और संवादप्रिय हैं। अपने पिता विंध्य की पहचान, समाजसेवी स्व. श्री भैयालाल शुक्ल के चरित्र की विशेषताओं और जनसेवा के भाव को शिरोधार्य कर उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल उनकी विरासत को सहेजने और आगे ले जाने का कार्य कर रहे हैं। उनकी मीठी वाणी, विनम्रता और विचारों का सहज आदान-प्रदान करने की प्रवृत्ति सबको आकर्षित करती है। इन व्यक्तिगत अभिव्यक्तियों ने उन्हें जनता के दिलों में और मन में सरल, सशक्त और स्नेहमयी तस्वीर दी है।

भाजपा ने कृष्णा देवी शुक्ला को दी भावभीनी श्रृद्धांजलि

बैतूल। भाजपा के पूर्व जिला महामंत्री स्व. विजय शुक्ला, एवं रतनपुर मंडल के भाजपा नेता प्रशांत शुक्ला की माताजी श्रीमती कृष्णा देवी शुक्ला के असामयिक निधन पर जिला भाजपा परिवार ने शोक संवेदनाए व्यक्त की है। श्रीमती शुक्ला के निधन पर जिले के सभी भाजपा कार्यकर्ताओ ने दुख की इस घडी में ईश्वर से दिवंगत की शांति एवं शोकाकुल परिवार को यह दुख– सहन करने की कामना परमपिता परमेश्वर से करते हुए भावभींनी श्रृद्धांजलि अर्पित की है। शोक संवेदना व्यक्त करने वालो में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक हेमंत खंडेलवाल, केन्द्रीय राज्यमंत्री एवं सांसद दुर्गादास उइके, जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार , विधायक महेन्द्रसिंह चौहान, चंद्रशेखर देशमुख, डा.योगेश पंडाग्रे, गंगा उइके, जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पंवार, उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, मंडल अध्यक्ष रतनपुर कृष्णा यादव सहित जिले के समस्त पार्टी पदाधिकारी, कार्यकर्ता प्रमुख है।

मेंटनेंस के कारण कल बंद रहेगी बिजली

बैतूल। बिजली कंपनी द्वारा 4 अगस्त से 8 अगस्त तक अलग-अलग फीडरों का प्रात– 9 बजे से दोपहर 1 बजे तक मेंटेनेंस कार्य किया जाएगा। मध्य प्रदेश मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड बैतूल शहर जोन-1 के प्रबंधक ने बताया कि 4 अगस्त को 11 केव्ही ग्रीन सिटी के मेंटेनेंस के चलते प्रात– 9 बजे से दोपहर 1 बजे तक विनोबा नगर, विवेकानंद वार्ड, भग्गू ढाना, खादी उद्योग के पास, ग्रीन सिटी, माचना नगर, हमलापुर चौक, फॉरेस्ट ट्रेनिंग सेंटर, जज कॉलोनी, मांझी नगर, तिवारी पेट्रोल पंप के पास वाले क्षेत्र में विद्युत सप्लाई बंद रहेगी। इसी प्रकार 5 अगस्त को 11 केव्ही खंजनपुर के मेंटेनेंस के चलते प्रात– 9 बजे से दोपहर 1 बजे तक खंजनपुर, अर्जुन नगर, टेलीफोन कॉलोनी, विकास नगर, कालापाठा, दुर्गा वार्ड, कत्तल ढाना, सुयोग कॉलोनी, सरस्वती स्कूल, डिपो रोड में विद्युत सप्लाई प्रभावित रहेगी। इसके अलावा 6 अगस्त को 11 केव्ही कालापाठा फीडर के मेंटेनेंस के चलते सुबह 9 बजे से दोपहर 1 बजे तक लोहिया वार्ड, चुन्नीढाना, राजेंद्र वार्ड, सिविल लाइन, संजय कॉलोनी, मुर्गी चौक, शिवाजी वार्ड, स्वीपर कॉलोनी, जेएच कॉलेज रोड के क्षेत्र में विद्युत सप्लाई बंद रहेगी। इसी प्रकार 7 अगस्त को 11 केव्ही रामनगर फीडर के मेंटेनेंस के चलते प्रात– 9 बजे से दोपहर 1 बजे तक रामनगर, गर्ग कॉलोनी, अचलपुर नाका, पटवारी कॉलोनी, जयप्रकाश वार्ड, खखरा जामठी में तथा 8 अगस्त को 11 केव्ही सोनाघाटी फीडर के कोसमी फाटक, पॉलिटेक्निक कॉलेज, सोना घाटी क्षेत्र में विद्युत सप्लाई प्रभावित रहेगी। प्रबंधक ने बताया कि किन्ही अपरिहार्य कारणों से समय में परिवर्तन किया जा सकता है।

जिले में फसल बीमा की तारीख बढ़ी

- किसान 14 अगस्त तक करवा सकते हैं अपनी फसलों का बीमा

बैतूल। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना अंतर्गत जिले में फसलों का बीमा 1 जुलाई से प्रारंभ है। कृषि अधिकारी आनंद बडोनिया ने बताया कि फसल बीमा करने की अंतिम तिथि 31 जुलाई को बढ़ाते हुए अऋणी कृषकों के लिए 14 अगस्त एवं ऋणी कृषकों के लिए 31 अगस्त निर्धारित की गई है। उन्होंने बताया कि कृषक को दिए गए प्रीमियम राशि सोयाबीन 840 रुपए, मक्का 722 रुपए, धान सिंचित 814, धान सिंचित 651 रुपए, अरहर 735 रुपए प्रति हेक्टेयर है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत बीमा करने के लिए इच्छुक कृषक अपनी निकटतम बैंक शाखा सरकारी समिति अधिकृत चैनल, जन सेवा केंद्र, कृषक स्वयं भी राष्ट्रीय फसल बीमा पोर्टल पर जाकर ऑनलाइन आवेदन कर योजना से जुड़ सकते हैं और इन्हीं कृषकों के फसल बीमा करवाने के लिए आवश्यक दस्तावेज बैंक पासबुक फसल बुवाई प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, बही एवं बटाईदार किसान या किराए पर ली गई भूमि के लिए मौलिक द्वारा शपथ पत्र प्रस्तुत किया जाना अनिवार्य है। उन्होंने जिले के किसानों से प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में जुडक़र योजना का लाभ लेने की अपील की है।

जिला अस्पताल में सेवानिवृत्ति के बाद नहीं हुई पदस्थापना

रेडियोलॉजिस्ट नहीं, सामान्य मरीजों को बाहर से करना पड़ रहा सोनोग्राफी

बैतूल। जिला अस्पताल बिना रेडियोलॉजिस्ट डॉक्टर के संचालित हो रहा है, यहां जो रेडियोलॉजिस्ट पदस्थ थे, वह सेवानिवृत्त हो चुके है, तब से लेकर वर्तमान तक नये रेडियोलॉजिस्ट डॉक्टर की पदस्थापना नहीं हो पाई है। जिस समय डॉक्टर के सेवानिवृत्ति की तिथि नजदीक थी, उस समय से अस्पताल प्रबंधन ने रेडियोलॉजिस्ट की नियुक्ति की मांग कर रहा है। लेकिन नये डॉक्टर की पदस्थापना नहीं हो सकी। जिससे मरीजों को सोनोग्राफी कराने में दिक्कते हो रही है। हालात यह है कि जिला अस्पताल में पेट से संबंधित मरीजों को सोनोग्राफी कराने के लिए निजी अल्ट्रासाउंड सेंटर जाना पड़ रहा है, जहां मरीजों को प्रति सोनाग्राफी के 700 से 800 रूपये चुकाने पड़ रहे है। बता दे कि जिला अस्पताल में पदस्थ रेडियोलॉजिस्ट डॉ. ओपी यादव पिछले साल 31 दिसम्बर 2023 को रिटायर हो गए। उनके रिटायरमेंट के डेढ़ साल बाद भी जिला अस्पताल में नए डॉक्टर की पदस्थापना नहीं हो सकी, जिससे अस्पताल में सोनोग्राफी का कार्य प्रभावित हो रहा है।

केवल गर्भवती महिलाओं की हो रही सोनाग्राफी – जिला अस्पताल में केवल दो महिला डॉक्टर द्वारा इमरजेंसी में गर्भवती महिलाओं की सोनोग्राफी की जा रही है, इसके अलावा अतिरिक्त मरीजों की सोनोग्राफी जांच नहीं होने से परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। गौरतलब है कि जिला अस्पताल में प्रतिदिन 500 से एक हजार से अधिक मरीज इलाज कराने आते है। ऐसे में डॉक्टर जिन्हें पेट संबंधी परेशानी है, उन्हें सोनोग्राफी

कराने की सलाह देते है, लेकिन जिला अस्पताल में डॉक्टर नहीं होने से मरीजों को शहर के प्राइवेट अल्ट्रासाउंड सेंटर जाना पड़ता है। जहां मरीजों की जेब हल्की हो रही है। यहां सोनोग्राफी के मरीजों को 700 से 800 रूपये चुकाने पड़ रहे है।

शासन को कई बार कराया अवगत, नहीं हुई पदस्थापना – जिला अस्पताल प्रबंधन ने स्वास्थ्य विभाग भोपाल को पत्र के माध्यम से कई बार रेडियोलॉजिस्ट नहीं होने की जानकारी दी। लेकिन विभाग की तरफ से भी अभी तक कोई जवाब नहीं आया है कि कब तक डॉक्टर की पदस्थापना होगी। अस्पताल के अधिकारियों के मुताबिक रेडियोलॉजिस्ट डॉक्टर रिटायर होने वाले थे, उसके एक पखवाड़े पहले से ही पत्र जारी किया और डॉक्टर की मांग की थी। इसके बाद भी अनेको बार पत्राचार किया, किन्तु रेडियोलॉजिस्ट डॉक्टर की पदस्थापना नहीं हुई है। जिससे लोगों के साथ-साथ डॉक्टरों की भी परेशानी बढ़ गई है कि वे मरीज के सही उपचार के लिए सोनोग्राफी नहीं करवा रहे है। बिना सोनोग्राफी के जांच करना या निजी सेंटरों से सोनोग्राफी करवाने की सलाह देना डॉक्टरों के लिए भी परेशानी का कारण बन गया है।

गरीब मरीजों पर पड़ती है आर्थिक मार – जिला अस्पताल में निःशुल्क सोनोग्राफी की जाती है, लेकिन यहां डॉक्टर नहीं होने से मरीजों को निजी सेंटरों पर सोनोग्राफी करवानी पड़ रही है। जिसमें सबसे अधिक आर्थिक मार गरीब वर्ग के मरीजों पर पड़ती है। जहां पर अल्ट्रासाउंड जांच के लिए उनको 700 से 800 रुपए चुकाना होते हैं। यही सोनोग्राफी जिला अस्पताल में निःशुल्क हो जाती थी। कई लोगों के पास रूपए नहीं होने पर सोनोग्राफी तक नहीं करवा पा रहे है। लेकिन अभी अस्पताल में नये रेडियोलॉजिस्ट को लेकर कोई ठिकाना नहीं है। कब तक नए डॉक्टर अस्पताल को मिलेगा, यह बताना भी अभी संभव नहीं है।

इनका कहना है –

जनरल सोनोग्राफी के लिए कोई डॉक्टर नहीं है। गर्भवती महिलाओं की सोनाग्राफी के लिए दो महिला डॉक्टरों को नियुक्त किया गया है, जो गर्भवतियों की सोनोग्राफी करने में प्रशिक्षित है। बाकी के कुछ विशेषज्ञों को भी प्रशिक्षण दिया जाना है। उसके लिए प्रस्ताव भेजा है, मंजूरी मिलती है तो उन्हें भी प्रशिक्षित किया जायेगा।

– डॉ. जगदीश घोरे,
सिविल सर्जन, जिला अस्पताल, बैतूल

शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैतूल ने जिला स्तरीय पर्यटन क्विज में पाया प्रथम स्थान

राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में बैतूल जिले का करेगी प्रतिनिधित्व

बैतूल। मप्र सरकार पर्यटन विभाग, स्कूल शिक्षा विभाग और जिला प्रशासन के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को जिला स्तरीय पर्यटन क्विज का आयोजन किया गया। जिसमें शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैतूल की टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है। अब विद्यालय की टीम राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में बैतूल जिले का प्रतिनिधित्व करेगी। जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय के सहायक संचालक भूपेंद्र वरकडे ने बताया कि जिले से 197 विद्यालयों के 591 विद्यार्थियों का पंजीयन था, जिसमें से 171 विद्यालयों के 513 विद्यार्थियों और शिक्षकों ने क्विज में सहभागिता की। क्विज के प्रारम्भ में सुबह 10 से 12 बजे तक लिखित परीक्षा का आयोजन किया गया। जिसमें 3-3 विद्यार्थियों की 171 टीमों ने सहभागिता की। विद्यार्थियों को 100 प्रश्नों का प्रश्न पत्र हल करने दिया गया। प्रश्न पत्र में विद्यार्थियों से मप्र के ऐतिहासिक, भौगोलिक और पर्यटक स्थलों से सम्बंधित प्रश्न पूछे गए। उन्होंने बताया कि लिखित परीक्षा के परिणाम की घोषणा के पश्चात प्रथम 6 टीमों ने मल्टीमीडिया क्विज में भाग लिया। क्विज के परिणाम के अनुसार क्विज की प्रथम विजेता शा. उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैतूल 315 अंक, द्वितीय स्थान पर शासकीय हाई स्कूल बाकूड 240, तृतीय स्थान पर शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सोनोरा 210 अंक, चतुर्थ स्थान पर गुरुकुल विद्यालय

मुलताई 195 अंक, पंचम स्थान पर कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैतूल गंज 160 अंक एवं छठवें स्थान पर ओजस विद्यालय आमला ने 150 अंक के साथ प्रतियोगिता में पुरस्कार प्राप्त किया। कार्यक्रम के नोडल अधिकारी डॉ.अनिल कुशवाहा जिला शिक्षा अधिकारी जिला बैतूल एवं सहायक अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक सुबोध शर्मा द्वारा विजेता टीमों को बधाई दी गई। इस दौरान टीमों कों मप्र पर्यटन विभाग द्वारा मेडल और शानदार टूर पैकेज कूपन दिए गए।

जिला स्तरीय पर्यटन क्विज में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैतूल की टीम राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में बैतूल जिले का प्रतिनिधित्व करेगी। इस अवसर पर पुरस्कार वितरण समारोह के सहायक संचालक भूपेंद्र वरकडे, मप्र पर्यटन विभाग के श्री एस अवस्थी, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बासंपानी के प्राचार्य नागेश पवार, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बडोरा के प्राचार्य दिलीप डाबड़े, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गंज के प्राचार्य ललित कुमार लिलोरे उपस्थित थे। कार्यक्रम में विनोद लिखितकर, हरिओम बादशाह एवं प्राचार्य, हाई स्कूल मलकापुर प्राचार्य संजय गुहे, स्कूल जासोदी श्री बनाहित, मॉडल स्कूल घोड़ाडोंगरी रामेश्वर नागले का सहयोग प्राप्त हुआ।

पीएम किसान सम्मान निधि योजना से लाखों किसानों के जीवन में आया सुधार : केंद्रीय मंत्री डीडी उइके

बैतूल। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को वाराणसी उत्तरप्रदेश में आयोजित कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की 20वीं किश्त 20 हजार 500 करोड़ की राशि 9 करोड़ 70 लाख से अधिक किसानों को सिंगल क्लिक के माध्यम से अंतरित की। जिसका जिला स्तरीय कार्यक्रम केन्द्रीय मंत्री दुर्गादास उइके की अध्यक्षता में बैतूल बाजार स्थित दीप्ति मैरिज लॉन में आयोजित किया गया। इस दौरान किसान सम्मान निधि योजना के तहत जिले के 2 लाख 65 हजार 734 कृषकों को 53.14 करोड़ रूपये की राशि का अंतरण किया गया। उल्लेखनीय है कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत वर्ष में कुल राशि रुपये 6 हजार की राशि तीन समान किश्तों में प्रदान की जाती है। केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उइके ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की 20वीं किस्त वितरण कार्यक्रम 2 अगस्त को पीएम किसान दिवस के रूप में मनाया गया। योजना अंतर्गत जिले के लाखों किसानों के परिवारों में सकारात्मक बदलाव आया है। उन्होंने जनजातीय क्षेत्र के किसानों से प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना का लाभ लेने की अपील की है। इस दौरान प्रोजेक्टर के माध्यम से वाराणसी उत्तरप्रदेश में आयोजित कार्यक्रम का लाइव प्रसारण भी कृषकों ने देखा। कार्यक्रम के दौरान कृषि वैज्ञानिकों के साथ कृषकों की परिचर्चा भी आयोजित की गई। इस अवसर पर जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, सुधाकर पवार सहित अन्य जनप्रतिनिधि, अपर कलेक्टर राजीव नंदन श्रीवास्तव, एसडीएम मकसूद अहमद, उप संचालक कृषि आनंद कुमार बड़ोनिया सहित बड़ी संख्या में कृषक मौजूद रहे।

जन्म जयंती : किशोर कुमार पर विशेष

दूध जलेबी खाएंगे खंडवा में बस जाएंगे

किशोर कुमार अक्सर कहा करते थे 'दूध जलेबी खाएंगे, खंडवा में बस जाएंगे।' लेकिन, उनकी ये इच्छा पूरी नहीं हो सकी। अपनी अधिकतर फिल्मों में हंसोड़ चरित्र निभाने वाले, स्टेज प्रोग्रामों में नाचते-गाते अपने साथ दूसरों को भी नाच नचाकर धूम मचाने वाले किशोर अंदर से बेहद संजीदा इंसान थे। उनके व्यक्तित्व की खासियत थी, उनकी बहुआयामी प्रतिभा। वे फिल्म विधा के एक ऑलराउंडर थे लेकिन अलबेले ऑलराउंडर।

किशोर कुमार की आवाज साफ पानी की तरह थी जिस रंग का गीत हो उसी रंग और कलाकार के व्यक्तित्व में ढल जाना ही उनके गीतों की खासियत थी। देव आनंद, दिलीप कुमार,धर्मेंद्र,राजेश खन्ना,अमिताभ बच्चन, विनोद खन्ना, जितेंद्र,शशि कपूर, ऋषी कपूर तक हर कलाकार की मूल आवाज और उसके मैनरिज्म को उन्होंने उसके लिए गाये गीतों में हूबहू उतार दिया। फिल्म, 'सगीना' में जब नायक दिलीप कुमार के लिए किशोर कुमार से पार्श्व गायन करवाने की बात चली तो फिल्म के गीतकार, संगीतकार और निर्देशक सभी असमंजस में थे कि दिलीप साहब जैसे बड़े और गंभीर अदाकारी करने वाले कलाकार पर किशोर कुमार की शोख आवाज कैसे सूट करेगी।

दिनेश पाठक

जब संगीतकार सचिन देव बर्मन ने किशोर के साथ रिहर्सल की तो एक बार में ही उसे फाइनल कर दिया और फिर, साला मैं तो साहब बन गया. . ., आग लगी हमरी झोपड़िया में हम गावें मल्हार . . . और लता मंगेशकर के साथ, तुम्हरे संग तो रैन बिताई कहां बिताए दिन ... जैसे सुपरहिट गीतों ने जन्म लिया। किशोर दा ने अभिनय सम्राट दिलीप कुमार की आवाज और अंदाज को इतना हूबहू कॉपी कर दिया कि गाने के बीच में दिलीप कुमार द्वारा बोले गए डायलॉग और गीत के बोलों में आवाज़ का अंतर करना मुश्किल हो जाता है।

अपनी अधिकतर फिल्मों में एक हंसते मुस्कुराते हास्य चरित्र को निभाने वाले, स्टेज प्रोग्रामों में नाचते गाते अपने साथ दूसरों को भी नाच नचा कर धूम मचाने वाले किशोर कुमार अंदर से बेहद संजीदा इंसान थे। फिल्म इंडस्ट्री में उनके बहुत कम मित्र थे, वे मिलने जुलने वालों को भी बहानों से टरका देते थे। पत्रकारों और फोटोग्राफरों से भी उन्हें परहेज था और प्रचार में बिल्कुल रुचि नहीं रखते थे। फिल्मी पार्टियों में भी किशोर कभी नहीं देखे जाते थे, इसके

बनिस्बत वे अपने घर के एकांत कमरे में बैठकर चिंतन मनन करना अधिक पसंद करते थे। किशोर कुमार के व्यक्तित्व की खासियत थी, उनकी बहुआयामी प्रतिभा, यानी वे फिल्म विधा के एक ऑलराउंडर थे लेकिन अलबेले ऑलराउंडर। उन्होंने गायन के अलावा, निर्माता, निर्देशक, लेखक,अभिनेता, गीतकार और संगीतकार के रूप में भी बहुत अच्छा काम किया।

निर्माता के रूप में किशोर कुमार ने नौ हिंदी और एक बांगला फिल्म बनाई। इनमें से 'चलती का नाम गाड़ी, झुमरू और बांग्ला फिल्म लुको चोरी को छोड़कर शेष फिल्मों दूर गगन की छांव में, हम दो डाकू, दूर का राही, बढ़ती का नाम दाढ़ी, शाबाश डैडी, चलती का नाम जिंदगी और दूर वादियों में कहीं, मैं किशोर कुमार ने अभिनय के साथ-साथ कथा,पटकथा, निर्देशक, गीतकार, संगीतकार और गायन की जिम्मेदारी भी संभाली थी।

मध्यप्रदेश के खंडवा में एडवोकेट कुंजीलाल गांगुली और गौरी देवी की तीसरी संतान के रूप में 4 अगस्त 1929 को जन्मे आभास कुमार गांगुली ही कालांतर में रुपहले पर्दे पर किशोर कुमार नाम से विख्यात हुये। अशोक, अनूप, किशोर नाम के तीन भाइयों की इकलौती बहन का नाम था सती देवी। चार भाई बहनों में किशोर सबसे छोटे थे।छोटा होने के नाते किशोर कुमार को सबका प्यार मिला और शायद इसी वजह से बचपन से ही उन्होंने एक बेफ्रिक, मस्तमौला, हंसोड़ व्यक्ति की छवि अपना ली जो जीवन पर्यंत उन पर हावी रही, लेकिन इस अलमस्त व्यक्तित्व के अंदर एक गंभीर, संवेदनशील और भावुक कलाकार मन भी था और वही बाद के वर्षों में उनके द्वारा स्वयं लिखित, निर्मित और निर्देशित फिल्मों में अक्सर झलकता था।

पचास और साठ के दशक में,बाप रे बाप, भाई भाई, नया अंदाज, आशा, दिल्ली का ठग, शरारत, मनमौजी, रंगोली, गंगा की लहरें, मिस्टर एक्स इन बॉम्बे, हम सब उस्ताद हैं, प्यार किए जा, दो दूनी चार, पड़ोसन, दूर गगन की छांव में, चलती का नाम गाड़ी, झुमरू और दूर का राही जैसी कई सुपर हिट फिल्मों में अपने अभिनय और गीतों के माध्यम से किशोर कुमार अत्यधिक लोकप्रिय हो गए थे। 70 के दशक में फिल्मों में सुपरस्टार राजेश खन्ना की जो आंधी आई उसने किशोर कुमार के गाए गीतों को आसमान की ऊंचाइयों तक पहुंचा दिया।

निधन से कुछ दिन पहले वो मुंबई की भीड़ भरी दुनिया को छोड़कर खंडवा में बसने की सोच रहे थे। दरअसल मुंबई की भागम भाग भरी जिंदगी से किशोर दा इतने अधिक दुखी हो गये थे कि वे अक्सर कहा करते थे, मैंने बंबई आकर गलती की। इससे तो खंडवा में बच्चों को पढ़ाता, चित्रकला सिखाता तो कितनी सुकून भरी जिंदगी रहती। मृत्युपर्यन्त वे कहते रहे 'दूध जलेबी खाएंगे, खंडवा में बस जाएंगे।' मगर ऊपर वाले ने 13 अक्टूबर 1987 को महज 58 साल की उम्र में किशोर दा को अपने पास बुला लिया और सिर्फ उनकी मृत देह खंडवा भेज दी, जहां उनकी इच्छानुसार उनका अंतिम संस्कार कर दिया गया।

'बिग बॉस-19' में किए गए पांच बड़े बदलाव

लोकप्रिय सलमान खान का फेमस कंट्रोवर्शियल रियलिटी शो 'बिग बॉस 19' जल्द ही टीवी पर दस्तक देने वाला है। यह शो 24 अगस्त से शुरू होगा। बीते दिन 'बिग बॉस 19' का पहला प्रोमो वीडियो रिलीज हुआ था, जिसमें सलमान खान नेता के रूप में नजर आ रहे थे। इसके साथ ही उन्होंने ये भी बताया कि इस सीजन घर में खूब राजनीति होगी। वहीं मेकर्स ने भी बिग बॉस 19 को सफल बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी, इस शो में ये 5 बड़े बदलाव किए हैं, जिनसे शो को जबरदस्त टीआरपी मिलना लगभग तय है।

इस सीजन शो में सबसे बड़ा बदलाव थीम का हुआ। इस सीजन के लिए दो थीम रखी गई हैं। पॉलिटिक्स और रिवाइंड थीम को इस सीजन शो में फॉलो किया जाएगा। ऐसे में देखना होगा कि ये दोनों ही थीम किस तरह से

काम करेंगी। बिग बॉस को हमेशा टीवी पर प्रिफरेंस मिली, लेकिन इस सीजन मेकर्स ने बड़ा बदलाव किया है। बिग बॉस-19 टीवी से पहले ओटीटी प्लेटफॉर्म जियो हॉटस्टार पर देखने को मिलेगा। जहां ओटीटी पर शो का प्रसारण रात में 9 बजे होगा तो वहीं टीवी पर यह शो 10.30 बजे आएगा।

बिग बॉस 19 को इस सीजन केवल सलमान खान ही नहीं, बल्कि उनके साथ दो और सितारे होस्ट करेंगे। शुरुआती 3 महीनों में तो सलमान खान ही शो को होस्ट करेंगे। लेकिन, बाद में उनकी जगह 2 सेलेब्स इस शो को आगे संभालेंगे। पहले बिग बॉस के सीजन 3 या फिर साढ़े 3 महीने तक ही चलते थे। लेकिन, इस सीजन शो को बढ़ा दिया गया। इस सीजन शो को बढ़ाकर साढ़े 3 की जगह साढ़े 5 महीने कर दिया गया है. ऐसा बिग बॉस के इतिहास में पहली बार हुआ है। इस सीजन बिग बॉस किसी भी कंटेस्टेंट्स के बीच कोई भी दखलंदाजी नहीं करेंगे। शो में केवल और केवल बिग बॉस का ही राज होगा। प्रोमो वीडियो में भी यही देखने को मिला था कि सलमान खान ने ये बात कही थी कि इस सीजन शो में घरवालों का ही राज होगा।

रियल बॉक्स

सिनेमा के परदे पर 'दोस्ती' सबसे लंबी चली

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

हिंदी फिल्मकारों के लिए दोस्ती की कहानियां एक तरह से आसान बिकाऊ फार्मूला रहा। एक फिल्म हिट होते ही, उसके आसपास नई कहानियाँ गूंथी जाने लगती है! प्यार में धोखा, खून का बदला खून, प्रेम त्रिकोण, भाइयों का बिछुड़ना और फिर मिलना, दोस्ती में ग़लतफ़हमी और फिर त्याग! ये ऐसे हिट फॉर्मूले हैं, जो फिल्मकारों को हमेशा रास आते रहे। इनमें 'दोस्ती' का फार्मूला हर समय काल में दर्शकों को रास आया। 1964 में बनी राजश्री की फिल्म 'दोस्ती' को अपने समय की सबसे हिट फिल्म माना जाता है। उसके बाद तो दोस्ती की मिसाल वाले इस विषय को कई बार घुमा फिराकर परोसा जाता रहा! हर दौर में दोस्ती की भावना को नए-नए तरीकों से पेश किया गया! जिनमें दोस्त, शोले, चुपके-चुपके, नमक हराम, हेराफेरी, शान, सुहाग, मुकद्दर का सिकंदर, राम-बलराम, दोस्ताना, सौदागर, खुदगर्ज, दिल चाहता है, जिंदगी ना मिलेगी दोबारा, रंग दे बसंती, काई पो चे और चश्मे बद्दूर जैसी फ़िल्में शामिल हैं। परदे पर दोस्ती के कथानक भाई-चारे, मुश्किलों में साथ खड़े रहने और दोस्त के लिए प्रेमिका का त्याग करने जैसे फार्मूलों के आसपास घूमते रहे हैं। ये कथानक दोस्ती के विभिन्न पहलुओं को उजागर करते हैं। लेकिन, बदलते समय के साथ इनमें तड़का भी लगता रहा। 'थ्री इडियट्स' और 'जिंदगी न मिलेगी दोबारा' ऐसी ही फ़िल्में हैं।

अमिताभ बच्चन के स्वर्णकाल की ज्यादातर फिल्मों का केंद्रीय विषय भी दोस्ती रहा! अमिताभ ने कई फिल्मों में दोस्ती की भावना पेश की! फिर वो चाहे जंजीर, शोले, नमक हराम, हेराफेरी, शान, सुहाग, दोस्ताना हो या मुकद्दर का सिकंदर! याद कीजिए अमिताभ के साथ हर फिल्म में कोई दोस्त जरूर रहा। निजी जीवन में भी अमिताभ और विनोद खन्ना के बीच अच्छी दोस्ती के बारे में कभी पढ़ा नहीं गया, लेकिन परदे पर इन दोनों ने कई बार दोस्ती को जीवंत किया! इनमें हेराफेरी, मुकद्दर का सिकंदर जैसी फिल्में शामिल हैं। 'दोस्ताना' में शत्रुघ्न सिन्हा के साथ अमिताभ की दोस्ती मिसाल के रूप में याद की जाती है। 1975 की बनी 'शोले' में जय और वीरू की दोस्ती के जज्बे को बेहद खूबसूरती से दर्शाया गया! इस जोड़ी ने बाद में 'चुपके-चुपके' और 'राम बलराम' जैसी फिल्मों में भी दोस्ती दिखाई! राजेश खन्ना के साथ अमिताभ ने 'आनंद' और 'नमक हराम' में दोस्ती को जीवंतता दी! शशि कपूर के साथ ईमान धरम, शान और 'सुहाग' में अमिताभ ने यही दोस्ती निभाई!

धर्मेंद्र भी उन कलाकारों में हैं, जिन्होंने कई एक्टर्स के साथ दोस्ती का किरदार अदा किया। धर्मेंद्र की दोस्ती शत्रुघ्न सिन्हा और विनोद खन्ना के साथ कई बार बनी! इसके बाद अनिल कपूर-जैकी श्रॉफ, अक्षय कुमार-सुनील शेट्टी और संजय दत्त-गोविंदा की दोस्ती पर कई फ़िल्मी कहानियाँ बनी! 1991 में सुभाष घई ने फ़िल्मी दुनिया के दो दिग्गजों दिलीप कुमार और राजकुमार को दोस्ती की डोर में बांधा और 'सौदागर' बनाई! इस फिल्म को भी दोस्ती के लिहाज से श्रेष्ठ फिल्म कहा जा सकता है। बीच में एक दौर ऐसा भी आया, जब दोस्ती में प्यार का तड़का लगने लगा! दो दोस्तों की दोस्ती के बीच एक लड़की आ जाती है! फिर या तो गलतफहमी पनपती है या प्रेम त्रिकोण बन जाता है! क्लाइमैक्स में या तो ग़लतफ़हमी दूर हो जाती है या फिर एक दोस्त का त्याग सामने आता है! लड़की के कारण दोस्तों में टकराव का ये चलन शायद राज कपूर, राजेंद्र कुमार की फिल्म 'संगम' फिल्म से शुरू हुआ था। जो भी हो, फिल्म का अंत सुखांत ही होता रहा। याद किया जाए तो ऐसी फिल्मों की कमी भी नहीं! लेकिन, प्रयोग के तौर पर हाल ही में कुछ ऐसी फ़िल्में भी बनाई गई जिनमें दोस्ती तो थी, पर फिल्म का केंद्रीय विषय कुछ और ही था! थ्री इडियट्स, दिल चाहता है, जिंदगी ना मिलेगी दोबारा, रंग दे बसंती, कुछ कुछ होता है, दिल तो पागल है

और चश्मे बद्दूर! इन फिल्मों ने दर्शकों को दोस्ती के कई नए रंग दिखाए!

आज की कुछ फिल्मों का कैनवास दोस्तों के सपनों के साथ उनके आंतरिक टकरावों पर भी फोकस रहा! कहीं विचारों में मतभेद होने के बावजूद दोस्त एक-दूसरे का नजरिया समझने की कोशिश करते हैं। कहीं अलग-अलग सामाजिक और आर्थिक हालात वाले दोस्त एक सपने के साथ आगे बढ़ते हैं और टीम बनाकर उसे पूरा करते हैं। यही कारण है कि अब दोस्ती और विचारधारा के बदलाव की कहानियों पर भी फ़िल्में बनने लगी है। दोस्ती के बहाने कुछ अलग ढंग की कहानियाँ भी कही जा रही है। ये फ़िल्में बताती है कि जीवन में खुद से बात करना, अपने सपनों से बात करना और दोस्तों से सपनों को शेयर करना कितना जरूरी है। दोस्ती में सपनों के साथ उनके टकरावों की कहानी भी कुछ फिल्मों की कथावस्तु रही है। लेकिन, दोस्तों के बीच टकराव कही भी इतने बड़े नहीं होते कि वो पूरी दोस्ती को प्रभावित कर दें। ऐसी ही एक फिल्म है 'जिंदगी न मिलेगी दोबारा' जिसमें तीन पुराने दोस्त सिर्फ मौज-मस्ती के लिए घूमने निकलते हैं और दर्शक बंधे रहते हैं।

दोस्ती पर आधारित कुछ पसंद की गई फिल्मों में 'दोस्ती' (1964) है, जो दो गरीब दोस्तों रामू और मोहन की कहानी है। रामू विकलांग है और मोहन की आंखें नहीं है। वे एक-दूसरे के साथ मिलकर जीवन की चुनौतियों का सामना करते हैं। 'आनंद' (1971) एक डॉक्टर और एक कैंसर से पीड़ित मरीज के बीच गहरी दोस्ती हो जाती है। इस फिल्म में जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और दोस्ती पर जोर दिया है। यह फिल्म नैतिकता और आदर्श से लबालब है। फिल्म में कोई भी खलनायक नहीं है। 'दोस्ती में गोविंद मूनिस ने रामनाथ और मोहन को अनाथ रखा। हिंदी फिल्मों के अनाथ बच्चे भटकाव के शिकार होते हैं। वे या तो किसी गुंडे की गिरफ्त में आ जाते हैं और अपराध की दुनिया में विचरण करने लगते हैं या फिर अभाव और असहाय जिंदगी से दर्शकों को द्रवित करते हैं। 'दोस्ती' में रामनाथ और मोहन आत्मनिर्भर होने की कोशिश करते हैं। परस्पर समर्पण और शिक्षा के माध्यम से वे आगे बढ़ना चाहते हैं।

एक बार उनके गाने से खुश होकर कोई राहगीर उनकी जेब में सिक्का डाल देता है, तो रामनाथ नाराज हो जाता है। उसे वह भीख लगती है। मोहन उसे समझाता है कि उसने मांगा तो नहीं, किसी ने खुश होकर कुछ दिया तो वह भीख कैसे हुई। पढाई के लिए पैसों का इंतजाम न होने पर वे गाते-बजाते हैं। ताराचंद बड़जात्या ने इस फिल्म के लिए सत्येन बोस से आग्रह किया था कि वह सुधीर कुमार और सुशील कुमार जैसे नए कलाकारों को मुख्य भूमिकाओं में लें। 1964 का साल याद करें, तब हिंदी सिनेमा में राज कपूर, शम्मी कपूर, धर्मेन्द्र, जितेंद्र से लेकर किशोर कुमार जैसे लोकप्रिय सितारों की धूम थी। राजश्री के कास्टिंग को-ऑर्डिनेटर नंद किशोर कपूर ने इन नई प्रतिभाओं को ताराचंद बडजात्या की बेटी राजश्री के सुझाव पर फिल्मों से जोडा। यह आश्चर्यजनक बात है कि 'दोस्ती' के बाद में सुधीर और सुशील कुमार को फिल्में नहीं मिलीं। जबकि, इसी फिल्म में पहली बार आए अब्बास खान उर्फ संजय खान आगामी वर्षों में पॉपुलर स्टार बने। 'दोस्ती की रिलीज के साल (1964) ही राज कपूर की 'संगम, मोहन कुमार की 'आई मिलन की बेला, शक्ति सामंत की 'कश्मीर की कली, चेतन आनंद की 'हकीकत और राज खोसला की 'वो कौन थी जैसी फिल्में पॉपुलर स्टार के साथ रिलीज हुई थीं। 'दोस्ती ने इन सभी फिल्मों का मुकाबला किया।

सर्वकालिक हिट 'शोले' (1975) दो दोस्तों वीरू और जय की कहानी पर टिकी है, जो डाकू गब्बर सिंह को पकड़ने के लिए एक साथ आते हैं। 'दिल चाहता है' (2001) तीन दोस्तों, आकाश, समीर और सिद्धार्थ, की कहानी है जो अपनी जिंदगी के अलग-अलग पड़ावों से गुजरते हुए दोस्ती के महत्व को समझते हैं। 'जिंदगी न मिलेगी दोबारा' (2011) भी तीन दोस्तों की कहानी है जो बैचलर पार्टी के लिए स्पेन जाते हैं और वहां अपनी दोस्ती के नए आयाम ढूंढते हैं। '3 इडियट्स' (2009) तीन इंजीनियरिंग छात्रों की कहानी है, जो अपनी पढ़ाई, करियर और जीवन के बारे में अलग-अलग दृष्टिकोण रखते हैं, पर उनकी दोस्ती बनी रहती है। 'काय पो छे' (2013) भी तीन दोस्तों पर टिकी है, जो एक क्रिकेट अकादमी खोलने का फैसला करते हैं और एक साथ काम करते हैं। 'छिछोरे' (2019) कॉलेज के दोस्तों के ग्रुप की कहानी है, जो एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं और दोस्ती को समझते हैं। 'आरआरआर' (2022) दो क्रांतिकारियों की दोस्ती की कहानी है, जो अंग्रेज शासन के खिलाफ लड़ते हैं।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

परदे पर भी आते हैं भूकंप आंधी बाढ़ और तूफान

अशोक जोशी

महबूब खान ने बाढ़ का प्रभावशाली उपयोग अपनी क्लासिक फिल्म 'मदर इंडिया' में किया। नरगिस और सुनील दत्त की इस फिल्म में बाढ़ से पूरे गांव में तबाही मच जाती है। भुखमरी और प्लेग की बीमारी से गांव वाले परेशान हैं, इस बीच कैसे ग्रामीण

अपने परिवार को बचाते हैं। इसके अलावा सोहनी महिवाल और बैजू बावरा में भी बाढ़ को फिल्म के कथानक से जोड़ा गया था। बारिश और बाढ़ को मनोज कुमार ने अपनी फिल्म 'पूरब और पश्चिम' के पहले श्वेत श्याम हिस्से में बहुत कलात्मकता से फिल्माया था। मनमोहन देसाई की फिल्म 'सच्चा झूठा' में राजेश खन्ना की बहन नाज भी बाढ़ में फंस जाती है।

दुनिया के कई बड़े देश इन दिनों सुनामी की संभावना से कांप रहे हैं। भूकंप के तीव्र आघात ने रूस और अमेरिका सहित दुनिया की महाशक्तियों को थरथरा दिया है। तेज हवाओं, बारिश, आंधी तथा तूफान का असर अक्सर इंसानी जिंदगियों पर भी पड़ा करता है। मौसम में इस तरह के बदलाव की सबसे बड़ी वजह ग्लोबल वार्मिंग है, जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। पर्यावरण हो रहे बदलाव के चलते हमें कई बार सूखा और कई बाढ़ का सामना भी करना पड़ता है। यह हमारी जिंदगी का अभिन्न अंग तो बन ही गए। लेकिन, बॉलीवुड के साथ हॉलीवुड की कई फिल्मों में भी इस तरह के तूफान और बाढ़ को फिल्मों के कथानक में शामिल किया गया। कभी-कभी तो फिल्मों के टाइटल और गानों में भी आंधी तूफान का प्रयोग किया गया है।

पहले हिंदी फिल्मों में आंधी, तूफान और बारिश को कभी सस्पेंस तो कभी परिवार में आयी आफत के रूप में दिखाया जाता रहा है। राज कपूर की पहली सफल फिल्म का टाइटल ही 'बरसात' था। उनकी फिल्म 'आवारा' में जब पृथ्वीराज कपूर अपनी गर्भवती पत्नी को घर से बाहर निकाल देते हैं, तो अचानक आंधी-तूफान के साथ बारिश आ जाती है। 'मेरा नाम जोकर' में जब राज कपूर फिल्म के तीसरे हिस्से में पद्मिनी का घर छोड़कर चला जाता है, तब कड़कड़ाकर बिजली गरजती है और भारी बरसात में पद्मिनी उसे लौटकर आने की गुजारिश करते हुए कहती है अंग लग जा बालमा। राज कपूर की ही फिल्म 'सत्यं शिवं सुंदर' के अंत में बाढ का प्रलयंकारी दृश्य दिखाया गया था। पूल टूटने की वजह से पूरा गांव बर्बाद हो जाता है। लोग अपना गांव छोड़कर दूर-दूर चले जाते है। शशि कपूर और जीनत अमान की इस फिल्म के बाढ वाले दृश्य को राज कपूर ने खुद कैमरा लेकर अपने लोनी वाले फार्म हाऊस में आयी वास्तविक बाढ के समय

फिल्माया था।

राज कपूर की तरह ही महबूब खान ने भी बाढ़ का प्रभावशाली उपयोग अपनी क्लासिक फिल्म 'मदर इंडिया' में किया था। नरगिस और सुनील दत्त की इस फिल्म में बाढ़ से पूरे गांव में तबाही मच जाती है। भुखमरी और प्लेग की बीमारी से गांव वाले परेशान हैं, इस बीच कैसे ग्रामीण अपने परिवार को बचाते हैं। 'मदर इंडिया' भारत की उन फिल्मों में से एक है जो ऑस्कर के नॉमिनेशन तक पहुंचने में कामयाब रही। इसके अलावा सोहनी महिवाल और बैजू बावरा में भी बाढ़ को फिल्म के कथानक से जोड़ा गया था। बारिश और बाढ़ को मनोज कुमार ने अपनी फिल्म 'पूरब और पश्चिम' के पहले श्वेत श्याम हिस्से में बहुत कलात्मकता से फिल्माया था। मनमोहन देसाई की फिल्म 'सच्चा झूठा' में राजेश खन्ना की बहन नाज भी बाढ़ में फंस जाती है।

ऐसा नहीं कि हिन्दी फिल्मों में प्राकृतिक आपदा के नाम पर केवल बाढ़ का ही सहारा लिया गया है। जब बाढ़ पर बस नहीं चल पाया तो फिल्मकारों ने भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदा को फिल्म की कथानक में जोड़कर प्रस्तुत किया है। इसमें सबसे ज्यादा सफल रही है बीआर चोपड़ा की फिल्म 'वक्त।' फिल्म में भूकंप की वजह से लाला केदारनाथ का घर तबाह हो जाता है जिससे उसका परिवार बिखर जाता है। फिल्म में दिखाया जाता है कि किस तरह एक प्राकृतिक आपदा पूरी जिंदगी को बर्बाद कर देती है।

फिल्म 'जल' में कच्छ के रण को दिखाया गया है। इसकी कहानी बक्का के इर्द गिर्द घूमती है जो सूखे के बीच पानी ढूंढ़ने की कोशिश करता है। डायरेक्टर अमोल गुप्ते की इस फिल्म में पूरब कोहली ने मुख्य भूमिका निभाई थी। साल 2005 में महाराष्ट्र में आई बाढ़ पर आधारित इस फिल्म में इमरान हाशमी और सोहा अली खान मुख्य भूमिका में थे। दोनों बाढ़ के बीच फंसकर कैसे मुसीबत से निकलते हैं फिल्म में यह दिखाया गया है। सारा अली खान और सुशांत सिंह राजपूत की ये फिल्म 'केदारनाथ' त्रासदी पर बनी है। साल 2013 में हिमालय के इतिहास की सबसे भयानक तबाही हुई थी। फिल्म हिंदू लड़की और मुस्लिम लड़के बीच लव स्टोरी पर आधारित है।

एक ओर जहां बॉलीवुड की फिल्मों में प्राकृतिक आपदा को फिल्म के कथानक के साथ जोडकर इस पर कुछ ही रीलें खर्च करने का प्रयास किया गया है वहीं हॉलीवुड ने इस विषय पर पूरी की पूरी फिल्में समर्पित कर दी है। उनके इस प्रयास को दर्शकों ने बकायदा पसंद भी किया है। हॉलीवुड में प्राकृतिक आपदाओं पर बनी फिल्मों की खासियत ये होती है कि ये अपने दर्शकों को असली थ्रिलर महसूस करवाती हैं और इतना रोमांच पैदा करती हैं कि दर्शक अपनी सीट पर से ही वो आपदा महसूस कर लेता है। ये बिल्कुल असली जैसा लगता है। अब तक प्राकृतिक आपदाओं से लेकर दुनिया के खत्म होने तक, कई प्राकृतिक आपदाओं पर फिल्में बन चुकी हैं। हेलेन हंट और बिल पैक्सटन द्वारा अभिनीत 1996 में आई फिल्म ट्विस्टर बॉक्स ऑफिस पर धमाकेदार हिट साबित हुई। यह फिल्म वास्तव में जबरदस्त दृश्य प्रभावों को दिखाती है।

2004 में आयी 'द डे आफ्टर टूमारो' इस फिल्म में बर्फीले तूफान और सुनामी की त्रासदी को दिखाया है। अमेरिका में आई इस त्रासदी से पूरा देश तहस नहस हो जाता है। इस फिल्म का निर्देशन रोलैंड ने किया था। इसके बाद 2007 में प्रदर्शित टोनी के निर्देशन में बनी फिल्म फ्लड पूरी तरह से बाढ़ पर ही आधारित थी। 2009 में प्रदर्शित फिल्म '2012' में भूकंप और सुनामी से पूरी दुनिया आयी तबाही का रोमांचक फिल्मांकन किया गया है। इस फिल्म जॉन कुसैक, अमांडा पीट और ओलिवर जैसे कलाकार मुख्य भूमिका में थे। इस फिल्म का निर्देशन भी रोलैंड ने ही किया था। दुनियाभर के दर्शकों ने फिल्म को काफी पसंद किया था।

2011 में आई स्टीवन सोडरबर्ग की फिल्म 'कंटेजियन' कोरोना वायरस के बढ़ने के बाद सोशल मीडिया पर ट्रेंड हो रही है। इस फिल्म में ग्वेनिथ पल्ट्रो, मारिऑन कोटिलार्ड, ब्रेयान क्रेन्सटन, मैट डेमन, लॉरेन्स फिशबर्न, जूड लॉ, केट विंसलेट और जेनिफर ने एक्टिंग की है। यह फिल्म 2009 में फैले स्वाइन फ्लू के वायरस के फैलने पर आधारित थी। 2015 में प्रदर्शित फिल्म 'सैन एंड्रियास' में ड्वेन जॉनसन,कार्ला गुजिनो और अलेक्जेन्ड्रा जैसे कलाकार मुख्य भूमिका में थे। इस फिल्म का निर्देशन ब्रैड पेयटन ने किया था। सैन एंड्रियास में भूकंप और सुनामी से होने वाली त्रासदी को दिखाया गया है। हॉलीवुड की ही फिल्म 'जियास्टार्म एक साइंस' डिजास्टर आधारित फिल्म थी। ये फिल्म साल 2017 में आई थी। इस फिल्म का निर्देशन डीन डिवालिन ने किया था। इस फिल्म में जेरार्ड बटलर, जिम स्टर्गेस और अब्बी कॉर्निश जैसे कलाकार मुख्य भूमिका में थे। हॉलीवुड ने जहां इस विषय को शिद्दत साथ उठाया है वहीं हमारे निर्माता निर्देशक इसे फिलर के रूप में ही उपयोग करते रहें। इससे ज्यादा हुआ तो बारिश, तूफान, आंधी, जलजला, आंधी और तूफान, आया तूफान जैसे शीर्षक या जिंदगी में आया तूफान, हुस्न चला है इश्क से मिलने जुल्म की बदली छाई है, जैसे गीत बनाकर ही रह गए हैं।

तेल (हो तो) देखो... फिर धार देखो...!

धर्म कर्म

प्रकाश पुरोहित

बा **'सा'ब, ये खाने का तेल क्या होता है?'**

'जो हम खाते हैं...!'

'ये कैसे खाते हैं, तेल है तो पीना पड़ता होगा?'

'अरे भाई हम साग-भाजी में तेल से बघार लगाते हैं या नहीं? बस, उसे ही तेल खाना कहते हैं। तुमने ये कहां से सुन लिया... और तुमसे क्या लेना-देना?'

'सा'ब, रेडियो पर सुना था कि राष्ट्र की प्रगति में सहयोग करना है तो खाने के तेल में कटौती कर दें। और कुछ तो कर नहीं सकता, तो सोचा यही कर लूं, क्या मालूम राष्ट्र की तरक्की हो ही जाए। जब देश की तरक्की होगी तो हमें भी फायदा मिलेगा ना! अगर हमारे खाने के तेल में कमी से लगाने की बात कही थी, इन्हीं तेल वाले सा'ब ने तो हमने उस रोज पानी वाली सब्जी खाई थी और सौ ग्राम तेल से दीया लगाया था। कोई इतना कह रहा है तो अच्छा नहीं लगता कि हम कुछ नहीं करें। उन्होंने कहा था थाली बजाओ, अब स्टील या पीतल की तो थी नहीं, जस्ते की प्लेट ही पीट दी थी हमने, और कई दिन तक फिर हाथ में लेकर रोटी खाई थी कि प्लेट में क्रेक आ गया था! किसी को यह कहने का मौका नहीं देना चाहते कि देश का काम आया और हमने कुछ नहीं किया।'

'वैसे ये खाने के तेल में कटौती क्यों करवा रहे हैं...?'

'अरे भाई देश में मोटापा बड़ी समस्या बनता जा रहा है, आज यदि नहीं रोका गया तो सारे अस्पताल मोटे लोगों से ही भरे होंगे, इसीलिए अभी से आगाह कर रहे हैं।'

'तो क्या, अभी-अभी पता चला है कि खाने का तेल खाने से मोटे होते हैं? क्या उन्होंने ही यह खोज की है, जो सुबह-शाम रेडियो पर याद दिलाते रहते हैं?'

'नहीं, ऐसी बात नहीं है, पहले से पता है,

राष्ट्र की तरक्की हो रही है तो हमें आगे आना चाहिए और योग देना चाहिए।'

'हां, यह तो तुमने ठीक सोचा, जब कोई सेहत-जानकार हर दस मिनट में पांच बार यह बात रेडियो और दूरदर्शन पर बोले जा रहा है तो हमें भी ध्यान देना चाहिए।'

'तो बताइए सा'ब, अब मैं क्या करूं?'

'कुछ नहीं, जितना तेल हर माह खरीदते हो, उसका दस फीसद कम कर दो। कितनी बोतल खाने का तेल खरीदते हो हर माह?'

'हर माह, क्या ऐसा भी हो रहा है देश में...? हमने तो कभी नहीं खरीदा बोतल के हिसाब से!'

'तो डिब्बा खरीदते होगे... कितने डब्बे तेल खरीदते हो हर माह या साल?'

'सा'ब... कैसी बात कर रहे हैं... हम तो हर रोज सौ ग्राम तेल खरीदते हैं, उसी में दाल या साग बन जाती है।'

'तुम सौ ग्राम तेल रोज खाते हो, एक आदमी के हिसाब से तो यह बहुत ज्यादा है, इसीलिए तो प्रधानमंत्री हर समय बोलते रहते हैं, खाने का तेल कम करो।'

'ये मेरे अकेले के लिए नहीं होता है सौ ग्राम रोज, पूरे परिवार के लिए है... छह लोग हैं खाने वाले।'

'सौ ग्राम में, दोनों टाइम का खाना?'

'नहीं सा'ब... एक समय का, शाम को तो खिचड़ी या दलिया बन जाता है कभी-कभी, नहीं तो एक समय ही खाना बहुत होता है हम लोगों के लिए तो...!'

'फिर तो तुम्हें कोई जरूरत ही नहीं है खाने का तेल कम करने की...!'

'लेकिन सा'ब... रोज-रोज, हर समय कोई टोकता रहता है तो लगता है अपन भी देश की तरक्की में योगदान करें। सभी कटौती कर रहे हैं खाने के तेल में... और हम ना करें तो बुरा लगता है। जब कोरोना में दीया लेकिन कोई बड़ा आदमी कहता है तो उसका छोटे लोगों पर असर जल्दी होता है।'

'अच्छा, हां, बापू बताते थे कि कोई शास्त्रीजी भी थे, जिन्होंने सोमवार को एक समय खाने के लिए कहा था... और पूरे देश ने कई साल सोमवार को सिर्फ एक टाइम ही खाया था। क्या उस समय भी लोग मोटे हो रहे थे?'

'नहीं, उन दिनों अनाज की कमी हो गई थी, अकाल और सूखा था, इसलिए हमारे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने सोमवार को एक समय खाने का कहा था, ताकि कोई भूखा नहीं रहे।'

'अच्छा... तो क्या इस समय खाने के तेल की कमी हो रही है देश में? विदेश से मंगाना पड़ रहा है?'

'नहीं भाई, खूब तेल है, इसलिए लोग खूब-खूब तेल खा रहे हैं और देश को मोटा बना रहे हैं, इसलिए उन्हें रोका जा रहा है।'

'अच्छा, जैसे दारू... और बीडी के बंडल पर चेतावनी लिखी रहती है, वैसा ही कुछ। फिर ये खाने का तेल क्यों बोल रहे हैं, क्या यह कोई अलग तेल होता है?'

'जैसे मीठा तेल, सरसों का तेल, तिल्ली का तेल, सोया तेल, कपास तेल... ये सभी खाने के ही तेल होते हैं। साउथ में खोपरे का तेल खाया जाता है। तेल सिर्फ तेल होता है। यह ज्यादा खाने से लोग मोटे हो जाते हैं और देश दुबला हो जाता है, इसलिए कम खाने को कहते हैं, और क्या!'

'मतलब यदि देश तरक्की नहीं कर पा रहा है तो मुझ जैसे दुबले-पतले पर तो कोई केस नहीं लगेगा ना?'

कोई जवाब नहीं आया, सन्नाटा छा गया।

(सुबह के समय मुझे ऐसे भयावह सपने क्यों आते हैं, नहीं पता...! रेडियो-टीवी बंद करना पड़ेगा।)

...और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

मैं क्या सोचती हूँ... यह भी तो समझिए

माना आपने कहा कि ये वैवाहिक जीवन में होने वाले मामूली झगड़े हैं तो जब आपने देखा कि स्त्री भावुक है उसको इतनी चोट पहुँची कि उसने आत्महत्या कर ली अगर ज़िंदा होती तो घर के पुरूषों की काउंसिलिंग होनी चाहिये उसकी मृत्यु के बाद भी कि वो दूसरी शादी करें तो उसे स्त्री के रंग रूप, खाना बनाना न आने पर तंज़ ना कर उसका हौसला बढ़ाये। आप कहते हैं इसे इस स्तर की प्रताड़ना नहीं मानते कि किसी को दोषी माना जाये पर यदि किसी के रूप रंग, काम को लेकर इतना जज़्मेंटल हो जाये कि सामने वाला प्रताड़ित होकर आत्महत्या कर ले तो क्या ये अपराध की श्रेणी में नहीं आयेगा।

कै मैं एक स्त्री न्यायिक प्रक्रिया का तहेदिल से सम्मान करती हूँ। जज साहब, कोर्ट आपसे एक अभी हाल ही में हुये निर्णय पर चर्चा करना चाहती हूँ। ''रंग-रूप, खाना अच्छा ना बनाने, मीनमेख निकालना स्त्री पर क्रूरता नहीं'' (चाहे उस स्त्री के लिये ये तंज़ इतना बड़ा हो गया कि उसने आत्महत्या कर ली) पर सम्मानित कोर्ट आपने उस स्त्री के नज़रिये से कभी नहीं देखा। जिसे बचपन से रंगरूप की महत्ता और खाना बनाने की कला सीखने पर ज़ोर दिया जाता है और कहा जाता है अगर ये कलायें तुम में नहीं तो तुम सही मायनों में तुम स्त्री नहीं। उसकी शिक्षा, ज्ञान सब गौण हो जाता है।

माना आपने कहा कि ये वैवाहिक जीवन में होने वाले मामूली झगड़े हैं तो जब आपने देखा कि स्त्री भावुक है उसको इतनी चोट पहुँची कि उसने आत्महत्या कर ली अगर ज़िंदा होती तो घर के पुरूषों की काउंसिलिंग होनी चाहिये उसकी मृत्यु के बाद भी कि वो दूसरी शादी करें तो उसे स्त्री के रंग रूप, खाना बनाना न आने पर तंज़ ना कर उसका हौसला बढ़ाये। आप कहते हैं इसे इस स्तर की प्रताड़ना नहीं मानते कि किसी को दोषी माना जाये पर यदि किसी के रूप रंग, काम को लेकर इतना जज़्मेंटल हो जाये कि सामने वाला प्रताड़ित होकर आत्महत्या कर ले तो क्या ये अपराध की श्रेणी में नहीं आयेगा।

आप को तय करना होगा कि स्त्री पुरूष दोनों के लिये एक दूसरे पे रूप रंग को लेकर कटाक्ष अपराध की श्रेणी में डाला जाये वैसे भी ये अजीब विडंबना है एक अदालत इसे अपराध की श्रेणी में रखती है सुप्रीम कोर्ट नहीं एक जीवन अगर किसी कटाक्ष से नष्ट

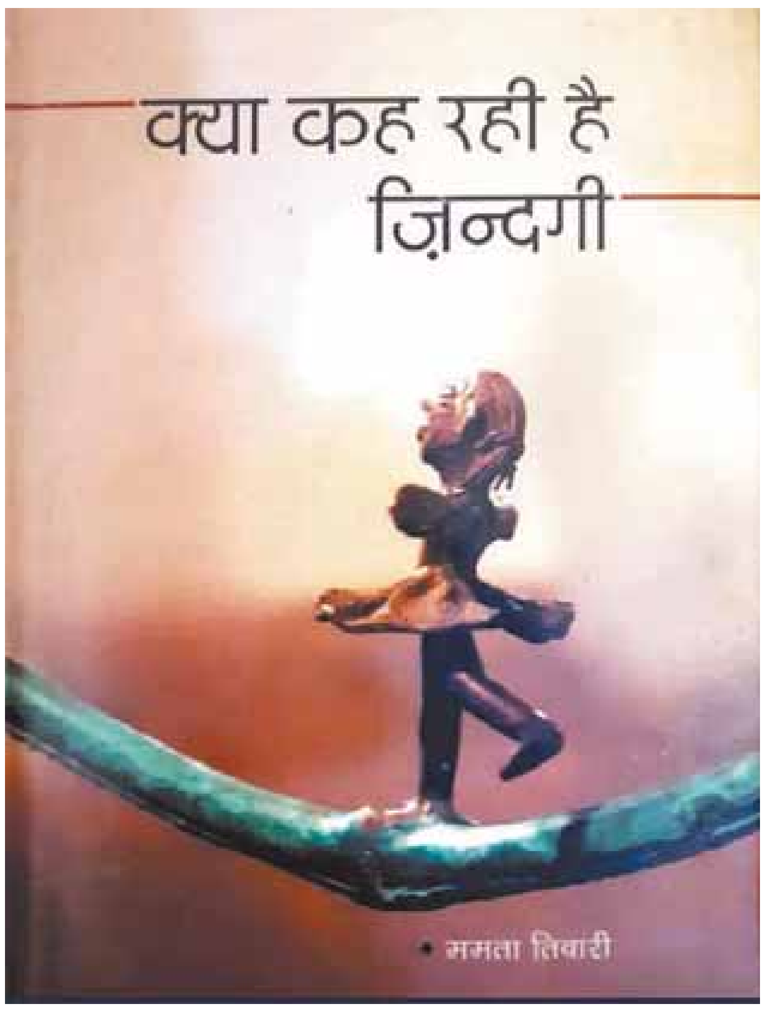

हो जाता है तो वो व्यक्ति निश्चिंतता से दूसरी स्त्री को भी चोट पहुँचायेगा या दूसरे पुरूष ऐसा करने के लिये निष्फ्रिक हो जायेंगे। भले ही अपराध का स्तर आप कम कर दें परंतु कुछ ना कुछ सजा का प्रावधान हो ताकि और पुरूष इस तरह के कटाक्ष ना करें। एक और दंपती से कोर्ट का कहना है आप अपना विवाद सौहार्द्रपूर्ण ढ़ंग से सुलझा ले अगर सुलझने की गुंजाइश होती तो वो कोर्ट क्यों आते। क्यों अपनी बदनामी कराते। उनके लिये काउंसिलिंग का इंतज़ाम होना चाहिये अगर कोर्ट का दख़ल ना हो तो शायद बात इस कदर बढ़ जाये, बिगड़ जाये भावावेश में कोई गलत कदम उठा ले। आदरणीय अदालत, कोमल मन, भावुकता और दूरदर्शी होकर भी निर्णय लेना होगा बाकी आप खुद समझदार हैं।

औरतें पैदाइशी मेज़बान होती हैं
पुरूष? ... मेहमान
वो चुनता है अपना, मनपसंद मेज़बान
चूँकि, औरत मेज़बान है
इसलिए चुनना उसका नसीब नहीं
उसे परोसना है अपना बेहतर
उसे होना है नफ़ीस
अब ये मर्ज़ी है मेहमान की
कि, अच्छा लगे तो ग्रहण करे
या छोड़ दे जूठन प्लेट में...
पर, याद रखना
मेज़बान को हर हाल में मुस्कुराना है
चाहे, मेहमान चल दे
भरी तश्तरी छोड़ के...।

रोशनी...

फोटो- बंसीलाल परमार

टीन कनस्तर पीट-पीटकर... गाना है, बजाना है!

❒ यूके से

प्रज्ञा मिश्रा

भारत में शास्त्रीय संगीत, उस्ताद मेहदी हसन, बेगम अख्तर की ग़ज़ल और रफ़ी साहब के गाने के बाद इंसान जब पहली बार मेटल संगीत सुनता है तो समझ ही नहीं आता कि आखिर शोर और चीख में सुनने जैसी क्या बात है। जब आप मेटल संगीत दीवानों से पूछें तो उन्हें वैसा सुकून मिलता है, जो दुनिया के शोर में नहीं मिलता।

इंग्लैंड में ही जाना कि अगर किसी को जीता-जागता हेवी मेटल संगीत कहा जा सकता है तो ओजी ऑस्बॉर्न हैं। उनका जन्म 3 दिसंबर 1948 को बर्मिंघम के एस्टन क्षेत्र में जॉन माइकल ऑस्बॉर्न के रूप में हुआ था। ओजी ऑस्बॉर्न नाम स्कूल में पड़ा और यही उनकी पहचान बन गया। ओजी ऑस्बॉर्न को डिस्लेक्सिया था, उसके आसार बचपन से ही दिखाई देने लगे थे। उन्होंने 15 साल की उम्र में स्कूल छोड़ दिया और कई बेतरतीब नौकरियां कीं, जिनमें बूचड़खाना भी शामिल था, जहां उन्हें पब में आंखें डालकर मजाक करने का मौका मिलता था। घर में चोरी करते समय टीवी उन पर गिर गया और कपड़े की दुकान में डकैती के लिए जेल में छह हफ्ते बिताने पड़े।

आखिरकार ओजी को संगीत ने बचाया। खड़खड़ाते ट्रांजिस्टर रेडियो से बीटल्स के गाने 'शी लव्स यू' की आवाज ने जिंदगी बदल दी।'यह खुशी और उम्मीद का अद्भुत विस्फोट था। उन्होंने लेखक ब्रायन एप्पलयार्ड को बताया था 'मैं सपने देखा करता था- क्या यह बहुत अच्छा नहीं होगा अगर पॉल मेकार्टनी मेरी बहन से शादी कर लें।'

छह दशकों के करियर में ऑस्बॉर्न 1970 के दशक में ब्लैक सब्बाथ के साथ स्टार बने, अस्सी के दशक में बेहद सफल एकल करियर की

शुरुआत की, फिर ओजफेस्ट रॉक फेस्टिवल के साथ खुद को हेवी मेटल संगीतकार बना लिया और 2002 में एमटीवी शो 'द ऑस्बॉर्न्स' की बदौलत बेहद सफल रियलिटी टीवी स्टार बन गए। ब्लैक सब्बाथ के शो की सूची में पैरानॉयड, एविल वुमन, हैंड ऑफ डूम और चिल्ड्रन ऑफ द ग्रेव जैसे शीर्षक वाले गाने शामिल थे। उनकी आवाज भले ही सुरीली न हो, लेकिन सब्बाथ के ड्रम, बेस और टोंड गिटार के घने मिश्रण को चीरती हुई ओजी ऑस्बॉर्न की आवाज को नजरअंदाज करना नामुमकिन था। ओजी ने 2005 में कहा था- 'सब्बाथ ने कभी भी महान बनने की कोशिश नहीं की। हमारा मकसद केवल लोगों को डराना था।'

समस्या यह थी कि ओजी बेहिसाब नशे को संभालने में उतने अच्छे नहीं थे, पर उनका पूरा ग्रुप इसका आदी था। उन्होंने ब्लैक सब्बाथ के मैनेजर डॉन आर्डेन की बेटी शेरोन आर्डेन की मदद से ब्लिजार्ड ऑफ ओज को फिर जिंदा किया। बाद में दोनों ने शादी की और उनके तीन बच्चे हुए- एमी, केली और जैक। शेरोन ने शराब और ड्रग्स के नशे पर मदद की पूरी कोशिश की। कई बार ऐसा भी हुआ, जब ऐसा लगा कि उन्होंने लत छोड़ दी है, लेकिन अक्सर लत से दूर हो जाते थे। उन्होंने इंटरव्यू में कहा था- 'अगर शेरोन न होतीं तो मैं बहुत पहले ही मर चुका होता।'

दो हफ्ते पहले की बात है, जब बर्मिंघम में ऑस्बॉर्न ने बीमारी की वजह से बैठकर शो किया, लेकिन जादू दोहरा नहीं सके। ताली बजाते, हाथ हिलाते और आंखें फाड़कर देखते, बिलकुल पुराने जमाने की तरह अपने हिट गाने गाए। 'मुझे अपने जीवन में जो भी हासिल हुआ है, उस पर मुझे गर्व है' उन्होंने इंटरव्यू लेने वाले से कहा था। 'अगर आप दुनिया के सबसे अच्छे लेखक होते तो भी आप मेरी जीवन नहीं लिख पाते।'